सक्षम

हिंदी पाठमाला

५

BM Publication

Published By:

Disclaimer and Liability

"This book is meant for educational and learning purposes. We have put every effort to serve learners with the best of our resources and knowledge. While editing and printing this book, utmost care and attention have been taken place. In spite of this, some errors or omissions in the publication might have crept into. It is to be notified that the author(s) of the book has/have taken all responsible care to ensure that the contents of the book do not violate any existing copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. If any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publishers in writing for corrective action. Authors and Publishers will not be responsible for any unintentional mistake(s). However, any mistake brought to our notice shall be rectified in our next edition."

© Editone International Pvt. Ltd.

All rights reserved with the publishers. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means: electronic, mechanical, photocopying, recording without the prior written permission of the publishers.

Print right : BM Publication

Conceptualized & Designed By: **Editone International Pvt. Ltd.**

Printed At:

aaaaaaaaaaaaaaaaaa

bbbbbbbbbbbbbbbb

EDITONE INTERNATIONAL

आमुख

विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सरल एवं स्पष्ट माध्यम भाषा है। भाषा में सम्मिलित कौशलों की सहायता से विचारों का आदान-प्रदान संभव हो पाता है। विद्यार्थियों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में शैक्षिक प्रणाली का अहम योगदान होता है। इस प्रणाली में रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों तथा जीवन कौशल का समावेश होना आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक में भाषा के चारों कौशल–श्रवण, वाचन, पठन, लेखन के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण पर बल दिया गया है। पुस्तक में चिंतन-मनन (Thinking), विश्लेषण (Analysis), कल्पनाशीलता (Imagination), रचनात्मकता (Creativity), मूल्यांकन (Evaluation) को भी समाहित किया गया है। इसमें निर्धारित मानक वर्तनी का प्रयोग किया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों की भाषा में बारीक समझ को विकसित करने में सक्षम है। इस पुस्तक में पाठ नियोजन करते समय विद्यार्थियों की रुचियों, जिज्ञासाओं एवं खोजबीन प्रवृति का विशेष ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक की पाठ्य-सामग्री बच्चों के स्तरानुकूल, सरल, सहज एवं रोचक रूप में प्रस्तुत की गई है।

इस पुस्तक में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 को ध्यान में रखकर सभी मूल्यों को तार्किक रूप से अपनाया गया है। रचनात्मक लेखन के अंतर्गत–कविता, कहानी, चित्र-कथा, संवाद, यात्रा-वर्णन एवं पत्र-लेखन आदि को शामिल किया गया है ताकि भाषा प्रयोग पर विद्यार्थियों की पकड़ मज़बूत बन सके, साथ ही विद्यार्थी व्याकरण का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर पाएँ।

इस श्रृंखला में विद्यार्थियों को ऐसा मंच देने का प्रयास किया गया है, जहाँ वे आत्मविश्वास के साथ से सोच-समझकर प्रश्नों का उत्तर दे सकें, साथ ही संवाद या चर्चा के द्वारा अपने सहपाठियों का भी दृष्टिकोण समझ पाएँ।

हमें यह विश्वास है कि यह पुस्तक छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी।

–प्रकाशक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
	एक सबक ऐसा भी (चित्रकथा)	5
1.	भारतवर्ष हमारा है (कविता)	7
2.	अर्जुन और किरात (प्राचीन कथा)	13
3.	समझदार लोमड़ी (कहानी)	19
4.	प्रिटोरिया जेल से (पत्र)	25
5.	चाँद का कुरता (कविता)	31
6.	ईमानदारी का परिचय (एकांकी)	37
7.	भारत में हॉकी (निबंध)	43
8.	मुक्ति की आकांक्षा (कविता)	49
9.	लाला लाजपत राय (जीवनी)	55
10.	पंच का न्याय (कहानी)	61
11.	मेरी पहली हिमाचल यात्रा (यात्रा वृतांत)	68
12.	'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' (कविता)	74
13.	बुद्धि का सौदागर (कहानी)	79
14.	पश्चाताप (लेख)	85
15.	हमारे त्योहार : हमारा स्वाभिमान (लोककथा)	91
16.	हार की जीत (कहानी)	97
17.	पर्यावरण प्रदूषण (निबंध)	103
	अभ्यास प्रश्न पत्र-1	109
	अभ्यास प्रश्न पत्र-2	111

EDUTONE INTERNATIONAL

एक सबक ऐसा भी

(चित्रकथा)

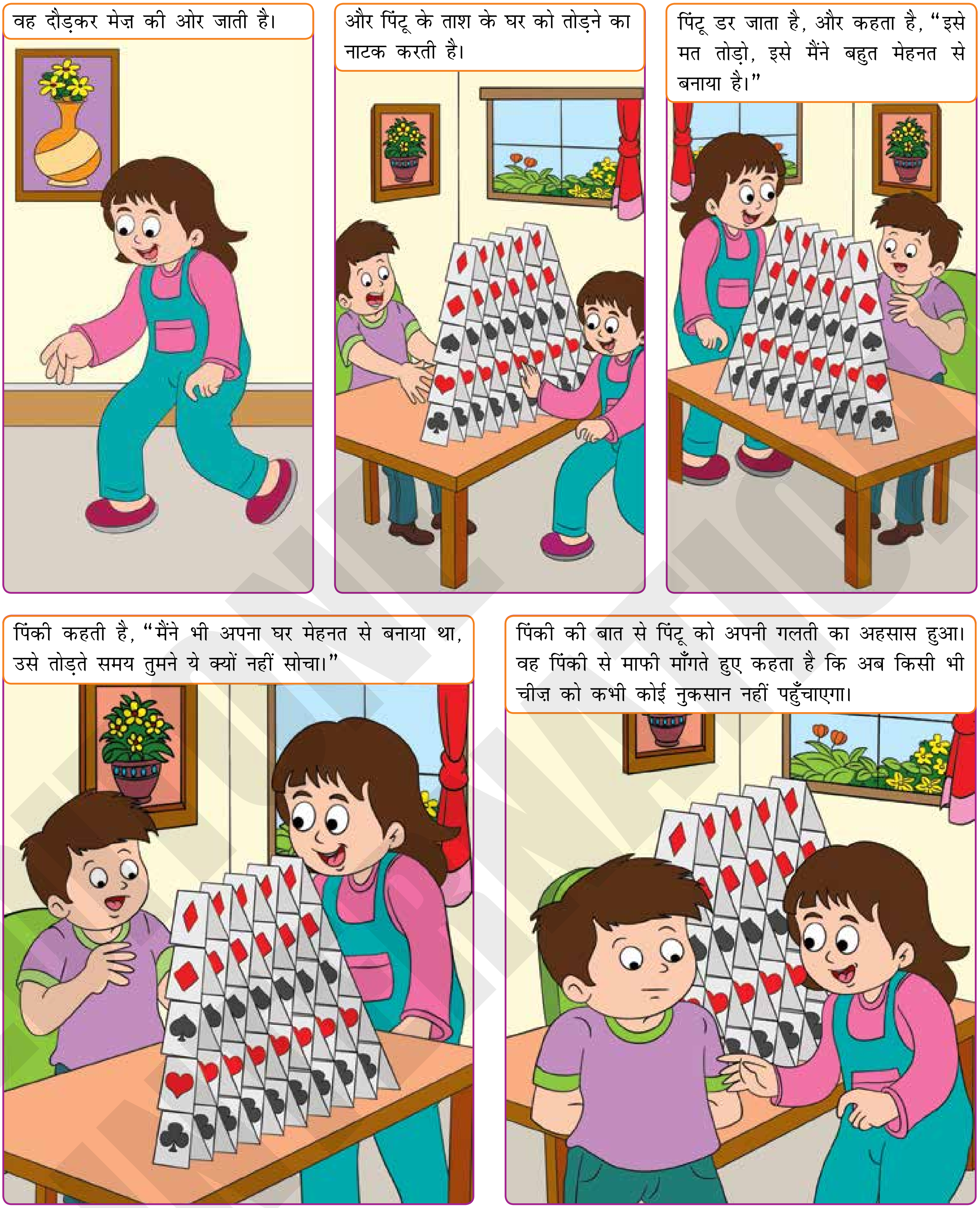

शिक्षा-हमें किसी के उत्साह को कम नहीं करना चाहिए बल्कि लोगों को प्रोत्साहित करना अच्छी बात होती है।

अध्याय 1

भारत वर्ष हमारा है!
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

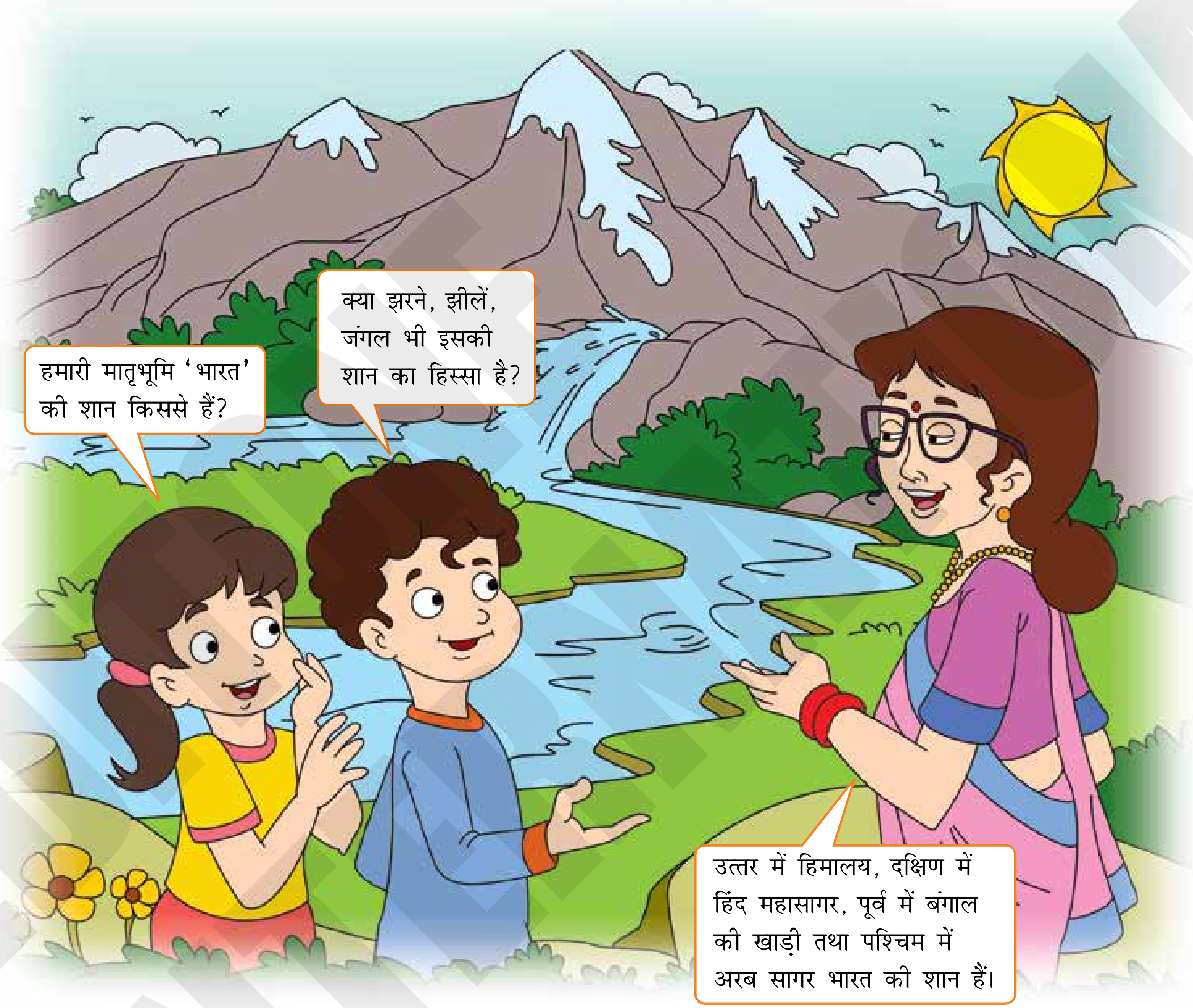

कविता का मूल तत्व

अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए हमें निसंकोच होकर सदैव तत्पर रहना चाहिए।

यह भारतवर्ष हमारा हैं,
हमको प्राणों से प्यारा हैं।
है यहाँ हिमालय खड़ा हुआ,
संतरी- सरीखा अड़ा हुआ।

गंगा की निर्मल धारा है,
यह भारतपर्ष हमारा है।

क्या ही पहाड़ियाँ हैं न्यारी,
जिसमें सुदंर झरने झारी।
शोभा में सबसे न्यारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।।

है हवा मनोहर डोल रही,
वन में कोयल है बोल रही।
बहती सुगंघ की धारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।।

तन-मन-धन प्राण चढ़ाएँगे,
हम इसका मान बढ़ाएँगें।
जग का सौभाग्य हमारा है,
यह भारतवर्ष हमारा हैं।।

-सोहनलाल द्विवेदी

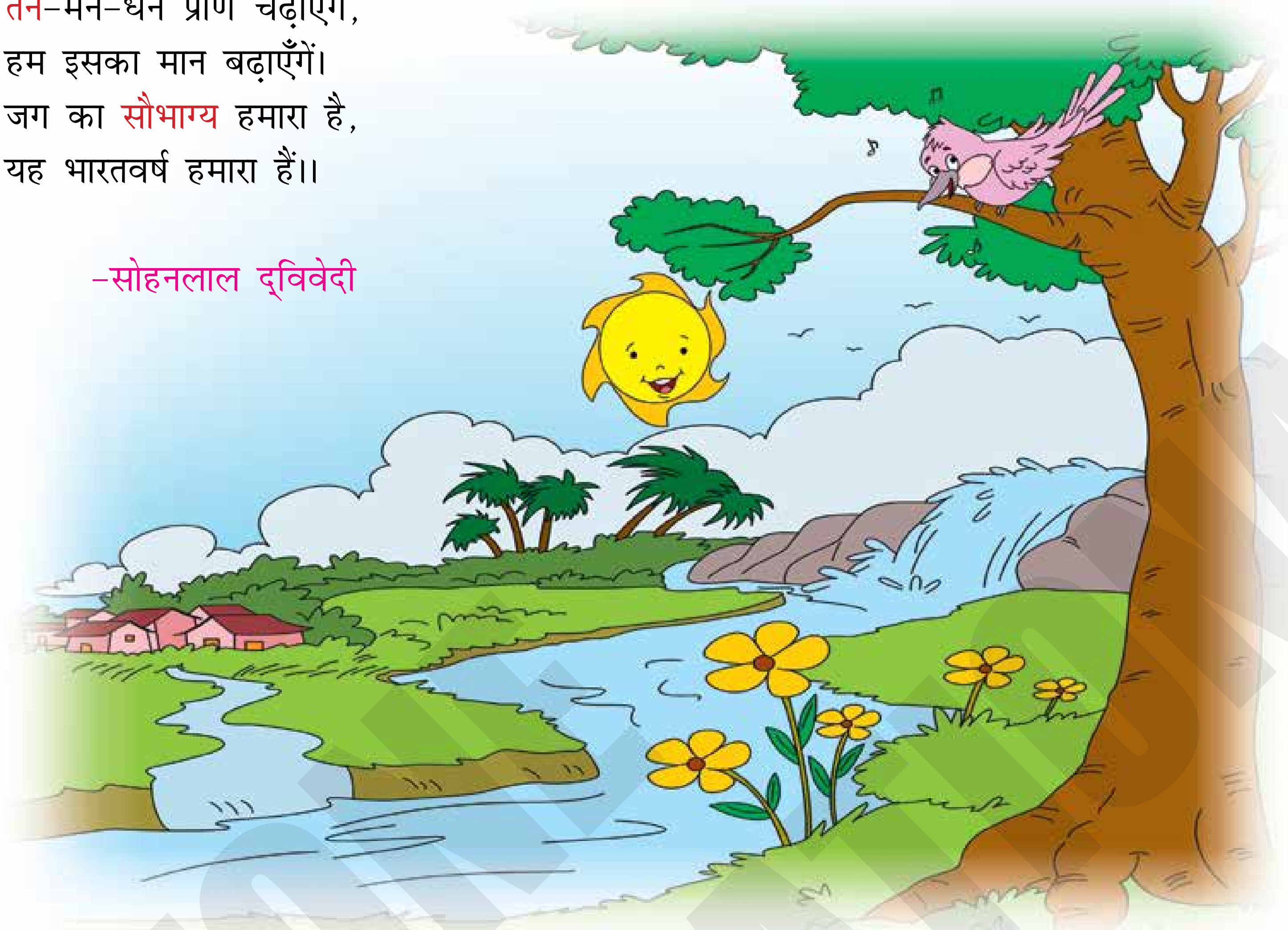

शब्दार्थ

संतरी	=	रखवाला/पहरेदार	सरीखा	=	जैसे
निर्मल	=	साफ-सुथरी	शोभा	=	सुंदरता
तन	=	शरीर	सौभागय	=	किस्मत

उच्चारण करें

पहाडियाँ   प्राणों   सुगंध   मनोहर   सितारा

अध्यापन संवेफत-

कविता के माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को अपनी मातृभूमि से प्रेम करने की प्रेरणा दें साथ ही भारत देश में मौजूद प्राकृतिक तत्वों के संबंध में जानकारी प्रदान करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।**

(क) भारतवर्ष किसका है?

(ख) भारत की शोभा कैसी है?

(ग) भारत का पहरेदार कौन है?

(घ) भारत में मनोहर क्या है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) भारत का मान बढ़ाने के लिए हम क्या करेंगे?

....

(ख) संतरी के समान भारत के उत्तर दिशा में कौन खड़ा है?

....

(ग) कवि के कथनानुसार भारत अनोखी सुंदरता वाला देश क्यों है?

....

(घ) प्रस्तुत कविता के लेखक कौन है?

....

3. **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए।**

(क) शोभा में सबसे न्यारा किसे माना गया है?

☐ अमेरिका को ☐ भारतवर्ष को ☐ हम को ☐ इन सभी को

(ख) कविता के रचियता कौन है?

☐ रामधारी सिंह दिनकर ☐ सोहनलाल द्विवेदी

☐ हरिवंशराय बच्चन ☐ सुभद्राकुमारी चौहान

(ग) भारत वर्ष का हम क्या बढ़ाएँगे?

☐ मान ☐ ज्ञान ☐ ध्यान ☐ ईमान

(घ) भारतवर्ष में बहती धारा कैसी है?

- [ ] निर्मल और सुगंधित
- [ ] दुर्गन्ध और कठोर
- [ ] मटमैली और धीमी
- [ ] सुगंधित और पंकयुक्त

4. दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थान भरिए।

बढ़ाएँगे	निर्मल	प्राण	शोभा

(क) तन-मन-धन .... चढ़ाएँगे।

(ख) .... में सबसे न्यारा है।

(ग) गंगा की .... धारा है।

(घ) हम इसका मान ....।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. यदि भारतवर्ष की सुरक्षा हेतु 'हिमालय' पहरेदार की तरह न अड़ा-अड़ा रहता तो हमें किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता? कक्षा में चर्चा करते हुए इस विषय पर पाँच वाक्य लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. दिए गए शब्दों को पहचानते हुए रिक्त वर्ण भरिए

(क) सुं + ... र + ता (ग) सु + गं + ...

(ख) सं + त + ... (घ) म + ... + ह + ...

7. समान तुक वाले शब्द कविता से ढूँढ़कर लिखिए।

(क) शिवालय – .... (ख) चढ़ाएँगे – ....

(ग) प्यारा – .... (घ) आरी – ....

8. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) धन – ....

(ख) शोभा – ....

(ग) झरना – ....

9. **नीचे दी गई पंक्तियों में क्रिया शब्द पर (○) लगाइए।**

हवा मनोंहर डोल रही,
वन में कोयल बोल रही।
बहती सुगंध की धारा है,
यह भारतवर्ष हमारा है।

10. **दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।**

(क) हिमालय - .... (ख) निमल - ....

(ग) मनोहर - .... (घ) भारतवर्ष - ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. **भारत में अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ है। कक्षा में चर्चा करते हुए यह जानने का प्रयास कीजिए कि विभिन्नता में एकता भारत में कैसे कायम है?**

12. **भारत की विशेषताओं पर चर्चा कीजिए और लिखिए।**

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. **भारत का क्षेत्रफल बताइए-**

(क) उत्तर से दक्षिण तक-....................................

(ख) पश्चिम से पूर्व तक-....................................

14. **पर्वतों की रानी किस चोटी का नाम है?**

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

15. **भारतवर्ष अनेक विभिन्नताओं को समेटे हुए भी अपने आप में विशाल एवं विशेष है। आप भारतवर्ष की किन विशेषताओं को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे? बताइए।**

अध्याय 2

अर्जुन और किरात
(प्राचीन कथा)

अध्ययन से पूर्व

- बच्चों को चित्र के माध्यम से बताएँ कि तीनों ही धुनर्धर थे। परंतु तीनों में कुछ अलग-अलग विशेषताएँ थी। विचारों के आदान-प्रदान द्वारा मूल बात को बताएँ।

प्राचीन कथा का मूल तत्व

किसी को कभी भी तुच्छ या कमजोर नहीं समझना चाहिए क्योंकि शक्तिशाली वही होता है जो दूसरों पर निज स्वार्थ हेतु किसी भी प्रकार का बल प्रयोग नहीं करता।

अपने वनवास काल के दौरान सभी पांडव अपनी ताकत को बढ़ाने में लगे हुए थे तो दूसरी तरफ अर्जुन भी पशुपति नामक अधिक शक्तिशाली दिव्यास्त्र लिए भगवान शिव की तपस्या में लीन रहने लगे। एक दिन वे हर रोज़ की तरह तपस्या में लीन थे कि तभी उसी क्षण एक भयानक शूकर गरजता हुआ वहाँ आ पहुँचा। उसे देख अर्जन का ध्यानभंग हो गया और उन्होने शूकर पर अपना बाण चला दिया। अर्जुन के दो तीर उसके शरीर के आर-पार हो गए। अर्जुन जैसे ही तीर निकालने के लिए बढ़े कि इतने में एक ज़ोरदार आवाज ने उन्हें रोक दिया। ''सावधान तपस्वी, यह मेरा शिकार हैं।'' अर्जुन ने देखा कि एक जंगली किरात धनुष बाण लिए दौड़ा चला आ रहा हैं। ऊँचा लम्बा शरीर, चौड़े कंधे, माथे पर जंगली फूलों की बेल और शरीर पर मृगचर्म था। अर्जुन ने कहा, ''ये मेरा शिकार है, मैंने इसे मारा है इसलिए मैं इसे नहीं छोड़ सकता।''

अर्जुन की बात सुनकर किरात क्रोध में आ गया। उसने अपना धनुष बनाया और कहा-यदि तुम हठ नहीं छोड़ोगे तो तुम्हें मुझसे युद्ध करना पड़ेगा।

अर्जुन ने कहा ''तो फिर बिलंब किस बात का यह शिकार किसका हैं इसका निर्णय अब युद्ध ही करेगा।'' देखते-देखते दोनों के मध्य भीषण युद्ध आरंभ हो गया। बाण पर बाण बरसते रहे लेकिन कोई भी बाण किसी को छू भी नहीं पाया। किरात की फुर्ती देखकर अर्जुन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अर्जुन मन ही मन सोचने लगे कि यह साधारण धर्नुधर नही है जिससे लड़ने

के लिए मुझे अपनी सम्पूर्ण विद्या का यूँ प्रयोग करना पड़ रहा है। घंटों युद्ध चलता रहा। अर्जुन का शरीर थकान से टूटने लगा। उन्होंने किरात से कहा-''बाण युद्ध छोड़ो अब मल्ल युद्ध को आओ।'' अर्जुन की बात किरात ने स्वीकार कर मल्ल युद्ध आरंभ किया। दोनों एक-दूसरे को मल्ल युद्ध में पटकनी देते रहे मगर हार किसी ने भी स्वीकार नहीं की। वह सोचने लगे साधारण मनुष्य और इतना शक्तिशाली। तभी अर्जुन की नज़र अपने हाथों से बनाए शिवलिंग पर पड़ी तो वे बोले, "हे किरात! तुमसे युद्ध करने में बड़ा आनंद आया, लेकिन जरा ठहरो, मैं पहले भगवान शंकर की पूजा कर लूँ फिर तुमसे युद्ध करता हूँ।"

अर्जुन की बात सुनकर भगवान शंकर मन ही मन, सोचने लगें अरे! यह क्या? ये तो मेरी ही पूजा में व्यस्त हो गया।

अर्जुन शिवलिंग पर जो भी पत्र-पुष्प चढ़ाते वे जाकर स्वयंमेव किरात के ऊपर गिरने लगते। अर्जुन को कुछ भी समझते देर न लगी वह हाथ जोड़कर किरात के आगे खड़े हो गए,"आप साधारण किरात नहीं हो सकते। आप अवश्य कोई देव हैं। कृपया अपना सही परिचय दें।" अर्जुन की विनय सुन भगवान शंकर साक्षात् प्रकट हो गए और बोले,"अर्जुन! तुम मेरी परीक्षा में सफल हुए। तुम वास्तव में बहुत वीर पुरूष हो। इतनी कठिनाई के बावजूद तुमने मुझे एक साधारण आदमी समझकर मुझ पर अपने दिव्यास्त्रों का प्रयोग नहीं किया।" मैं तुम्हें पशुपति नामक अमोघ दिव्यास्त्र प्रदान करता हूँ इतना कहकर भगवान शंकर अंतर्धान/अंतर्ध्यान हो गए।

शब्दार्थ

भीषण	= भयानक	सर्वश्रेष्ठ	= सबसे अच्छा
दिव्यास्त्र	= देवताओं द्वारा प्रदत्त हथियार	आश्चय	= हैरानी
शूकर	= सूअर	धर्नुधर	= धनुष-बाण चलाने वाला
तपस्वी	= तप करने वाला	स्वयंमेव	= अपने आप
किरात	= शिकारी	साक्षात्	= बिल्कुल सामने प्रत्यक्ष
मृगचर्म	= हिरण का चमड़ा	अमोघ	= खतरनाक
पांडव	= पांडु के पाँच पुत्र (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव)		

उच्चारण करें

कृप्या वास्तव साक्षात् साधारण दिव्याशास्त्रों भीषण परीक्षा

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पाठ के माध्यम से यह बताएँ कि अनुशासन, परिश्रम, साहस, दृढ़ता एवं लगन से ही शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है।

अभ्यास कार्य

ज़रा बताइए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) किरात का युद्ध किससे हुआ?

(ख) अर्जुन और किरात के बीच युद्ध किस जानवर के शिकार के कारण हुआ?

(ग) अर्जुन ने बाण युद्ध के बाद अन्य कौन-सा युद्ध किया?

(घ) अर्जुन अराधना कर क्या पाना चाहते थे?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) अर्जुन ने किरात से युद्ध क्यों किया?

....

(ख) भगवान शंकर किरात का रूप धारण कर अर्जुन की परीक्षा लेने क्यों पहुँचे?

....

(ग) किरात और अर्जुन के बीच किस बात पर विवाद उत्पन्न हुआ?

....

(घ) अर्जुन मन ही मन क्या सोच रहे थे?

....

3. किससे कहा और क्यों कहा?

(क) सावधान! तपस्वी यह मेरा शिकार हैं।

....

(ख) यह शिकार किसका है, इसका निर्णय अब युद्ध ही करेगा।

....

(ग) मैं तुम्हें पशुपति नामक अमोघ अस्त्र प्रदान करता हूँ।

....

EDITOR INTERNATIONAL

4. दिए गए सही कथन पर (✓) अथवा गलत कथन पर (✗) का निशान लगाइए।

(क) अर्जुन का ध्यान ब्रहमास्त्र के कारण भंग हुआ। ☐

(ख) अर्जुन ने मल्ल युद्ध करना चाहा। ☐

(ग) जंगली किरात के रूप में भवगान शिव प्रकट हुए। ☐

(घ) अर्जुन ने किरात को युद्ध में हरा डाला। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. क्या अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे? यदि हाँ, तो कैसे? लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए।

(क) तप करने वाला – ....

(ख) शिकार करने वाला – ....

(ग) भगवान में आस्था रखने वाला – ....

(घ) वन में जीवन बिताने वाला – ....

(ङ) श्रेष्ठ में भी श्रेष्ठ – ....

7. दिए गए शब्दों का समानार्थी शब्द लीजिए।

(क) शरीर – ....

(ख) अस्त्र – ....

(ग) जंगल – ....

(घ) शंकर – ....

8. दिए गए शब्दों का विच्छेदन कीजिए।

(क) शक्तिशाली – .... + ...

(ख) मृगचर्म – .... + ...

(ग) दिव्यास्त्रों – .... + ...

(घ) स्वयंमेव – .... + ...

9. **दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।**

(क) यह तो बहुत शक्तिशाली हैं – ....

(ख) तुम सच में वीर हो। – ....

(ग) लम्बा, चौड़ा शरीर और माथे पर जंगली फूलों की बेल – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. **महाभारत में अर्जुन के अलावा दूसरा कौन-सा धनुर्धर आपको प्रिय लगा और क्यों? लिखिए।**

11. **प्रस्तुत पाठ के युद्ध वृतांत में यदि अर्जुन और एकलव्य होते तो दोनों में से कौन युद्ध जीतता? कक्षा में विचार करते हुए दोनों के मध्य युद्ध संवाद को लिखिए।**

अर्जुन – ....

एकलव्य – ....

अर्जुन – ....

एकलव्य – ....

अर्जुन – ....

एकलव्य – ....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. **अर्जुन किन-किन अस्त्र-शस्त्र को चलाना जानते थे? किन्ही पाँच के नाम लिखिए।**

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. **युद्ध की स्थिति को टालना ही महानता की पहचान हैं। आप युद्ध की स्थिति को टालने हेतु क्या-क्या उपाय करना चाहेंगे?**

EDITONE INTERNATIONAL

अध्याय 3

समझदार लोमड़ी
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

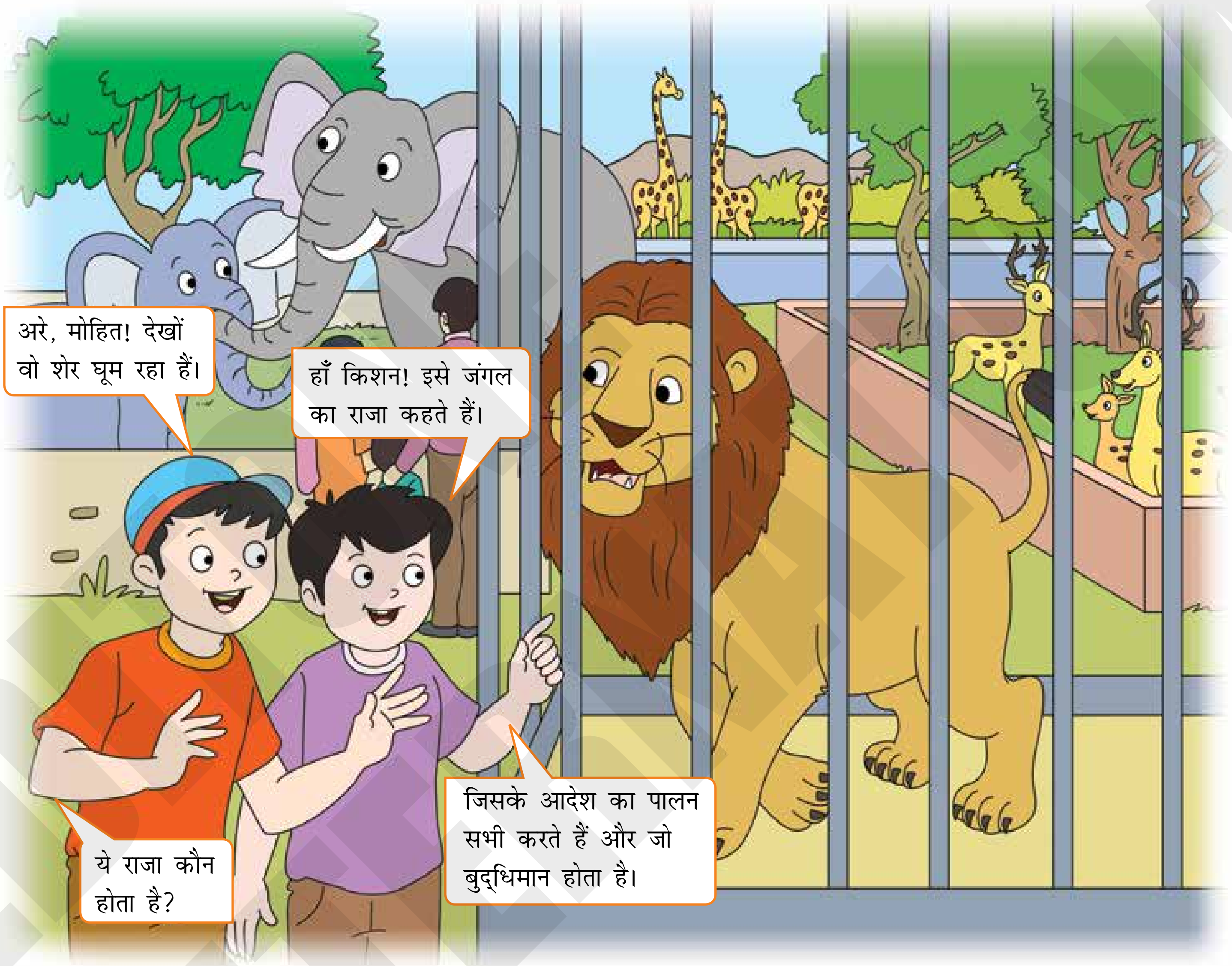

कहानी का मूल तत्व

प्रस्तुत कहानी में चतुराई का परिचय दिया गया है, अर्थात जब कोई हिंसक व्यक्ति/जानवर यदि शक्तिविहीन हो जाता है, तो वह चातुर्यपूर्वक काम लेता है।

एक बार की बात है। किसी जंगल में एक शेर रहता था जो समय के साथ-साथ बूढ़ा हो गया था। जिसकी वज़ह से वह शिकार भी नहीं कर पाता था। एक दिन वह बैठे-बैठे अपने बुढ़ापे की इस परिस्थिति के बारे में सोच रहा था।

उसके पिछले दोनों पैर भी अब काम करना बंद कर चुके थे। वह चलने-फिरने की समस्या से भी ग्रसित होने लगा। कई जंगली जानवर उसके आस पास घूमने लगे। लेकिन वह उन्हें पकड़ नहीं पाता था। उसकी शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो रही थी। अब तो मक्खियाँ भी उसके मुँह पर बैठी रहती थीं। आज उसे तीन दिन हो गए। उसने कुछ नहीं खाया। वह खिसक-खिसक कर गुफ़ा से बाहर आया।

उसने एक खरगोश देखा। वह उसकी गुफ़ा के पास बैठा घास खा रहा था। शेर ने खरगोश से कहा,"भैया खरगोश, यहाँ तो आना।" खरगोश डर गया। वह भागने के लिए मुड़ा।

शेर तुरंत बोला, "डरो मत खरगोश भैया, तुम तो मेरे छोटे भाई हो। मैं तुम्हें भला क्यों मारूँगा। यहाँ मेरे पास आओ।" खरगोश ने कहा,"जो कहना है, वहीं से कहो। मैं यहाँ से उत्तर दूँगा। तुम्हारे पास नहीं आऊँगा। मैं माँस खाने वालों पर विश्वास नहीं करता।"

शेर की थकी हारी आवाज दयालुता का परिचय दे रही थी। वह विनती कर रहा था। उसकी आँखों में लालच तो था ही नही! शेर बोला, ''खरगोश भैया मै ऐसा नही हूँ जो अपने भाई को खाऊँ। पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती। मुझे तो आपसे सिर्फ एक काम करवाना है। शेर की बातों को सुनकर खरगोश बोला, ''ठीक है। वहीं से काम बोलो मेरे पास मत आना।

शेर ने वहीं दूर से बोला, ''खरगोश भैया! मेरे जाने का समय नजदीक आ गया है, बस दम निकलने में कुछ ही समय बचा है। तुम उस पहाड़ी के पीछे चले जाओ। वहाँ एक लोमड़ी अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ रहती है। बरसात का मौसम भी नजदीक आ रहा है। मै चाहता हूँ मेरे मरने के बाद इस गुफ़ा में अपने बच्चों को ले आए। मेरी अंतिम इच्छा है, वह इस गुफ़ा में रहे, यह कहते-कहते शेर लुढ़क गया। खरगोश ने देखा कि शेर सचमुच मर गया। उसके मुँह से निकला "बेचारा, कितना भला था। मरते समय भी नेक काम करना चाहता है।"

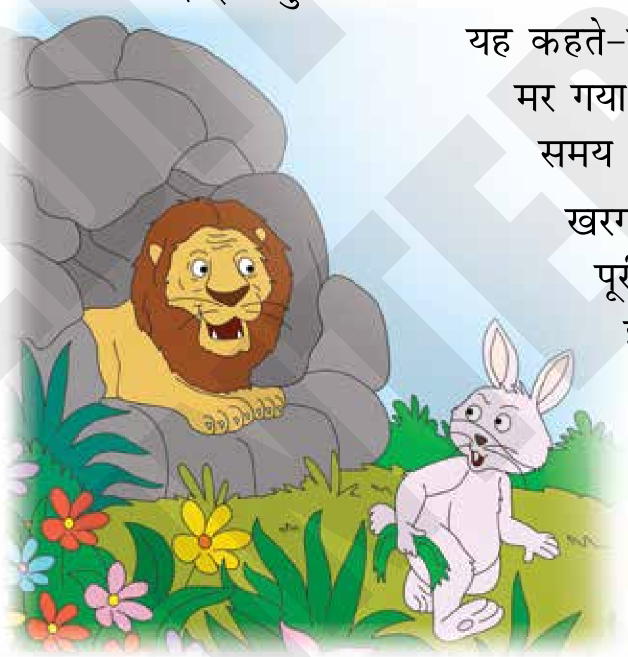

खरगोश ने निश्चय किया कि वह शेर की अंतिम इच्छा पूरी करेगा। वह शेर के पास गया। उसने घास के तिनके इकटठ्े किए। उसके शरीर को घास के तिनकों से ढक कर वह उस पहाड़ी की ओर चल पड़ा। खरगोश लोमड़ी के पास पहुँचा। लोमड़ी ने खरगोश को खाने के लिए पकड़ लिया। खरगोश ने लोमड़ी को उसके लाभ की बात बताई लोमड़ी ने खरगोश को छोड़ दिया और अपने बच्चों के साथ उस गुफ़ा की ओर चल

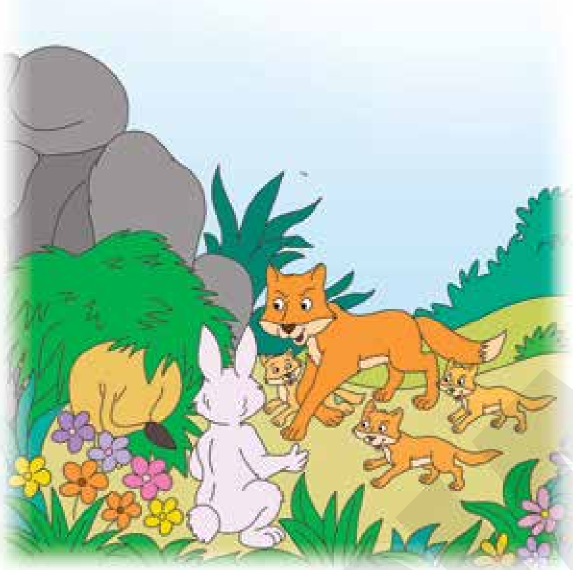

दी। दोनों शेर की गुफ़ा के पास आए। वहाँ शेर मरा हुआ पड़ा था। लोमड़ी खुशी से फूली नहीं समाई। उसके मुँह में पानी भर आया। वह शेर की ओर बढ़ी। उसके बच्चे भी उसके पीछे–पीछे चल दिए। लोमड़ी रुक गई। उसे तुरंत याद आया, ज़्यादा खुशी में बुद्धि काम नहीं करती। वह सोचने लगी। उसने खरगोश को देखा। वह ऊँची आवाज़ में बोली,"खरगोश भैया, शेर महाराज कब मरे? इन्हें मरे हुए कितना समय हुआ है?"

खरगोश ने कहा,"लोमड़ी बहन, इन्हें मरे हुए कोई दो घंटे हो गए।" लोमड़ी तुरंत बोली, "फिर तो शेर महाराज को यहीं रहने दो। मैं चलती हूँ।" खरगोश ने अपने कान खड़े किए, "क्यों बहन? अब तो तुम यहीं रहो। यह गुफ़ा अब तुम्हारी है।"

लोमड़ी बोली,"शेर महाराज जब मरेंगे तभी तो यह गुफ़ा मेरी होगी।"

खरगोश को बड़ा आश्चर्य हुआ, "क्या! क्या अभी शेर महाराज नहीं मरे?"

खरगोश को समझाते हुए लोमड़ी बोली, ''खरगोश भैया इतना बलशाली जानवर जब मर जाता है तो तीन घंटे तक उसकी पूँछ हिलती रहती हैं, तुम भी भोलेपन की बातें करते हो'' इतना कहने के बाद लोमड़ी ध्यान से देखने लगी। जैसे ही उसकी नजर शेर की हिलती हुई पूँछ पर पड़ी वह जोर से चिल्लाई ''भागो'' और अपने बच्चों को लेकर भाग गई। खरगोश भी वहाँ से छूमतंर हो गया।

शब्दार्थ

शक्ति	= ताकत, हिम्मत	गुफा	= शेर के रहने का स्थान
विनती	= प्रार्थना करना, याचना करना	लालच	= बेईमानी, लोभ, लालसा
अंतिम	= आखिरी		

उच्चारण करें

खरगोश बलशाली बुद्धि दयालुता आश्चर्य

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को कहानी का सार बताएँ तथा उन्हें समझाएँ कि विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य रखना आवश्यक होता है।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शेर किस बात से परेशान था?

(ख) भूख के कारण शेर कितने दिनों से परेशान था?

(ग) अपनी अंतिम इच्छा पर शेर क्या चाहता था?

(घ) खरगोश कहाँ बैठकर घास खा रहा था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) जंगल में बैठकर शेर क्या सोच रहा था?

....

(ख) खरगोश, शेर के नजदीक क्यों नहीं जा रहा था?

....

(ग) लोमड़ी को खरगोश ने क्या समझाया?

....

(घ) शेर को मरने का नाटक क्यों करना पड़ा?

....

(ङ) लोमड़ी, शेर को देखकर क्या बोली?

....

3. दिए गए प्रश्नों में उचित विकल्प का चयन कीजिए-

(क) शेर कौन-सी बीमारी से परेशान था?

☐ पीलिया ☐ लकवा ☐ बुखार ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) अपने नजदीक शेर ने किसको बुलाया?

☐ लोमड़ी ☐ भालू ☐ खरगोश ☐ चीता

(ग) खरगोश को शेर ने किसे बुलाने को कहा?

☐ भालू ☐ हाथी ☐ लोमड़ी ☐ घोड़ा

4. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) का तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) खरगोश को मारने की कोशिश शेर ने की। ☐

(ख) शेर लोमड़ी को अपनी गुफ़ा दान में देना चाहता था। ☐

(ग) पीलिया के कारण शेर शिकार नहीं कर पा रहा था। ☐

(घ) लोमड़ी की बातें सुनकर शेर पूँछ हिलाने लगा। ☐

5. उचित शब्द का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

निश्चय   लकवे   विश्वास   शक्ति   महाराज

(क) शेर के शरीर की .... खत्म होती जा रही थी।

(ख) मैं माँस खाने वालों पर .... नहीं करता।

(ग) .... के कारण शेर के पिछले दोनों पैर कमजोर हो गए थे।

(घ) खरगोश ने .... किया कि वह शेर की अंतिम इच्छा पूरी करेगा।

(ङ) फिर तो शेर .... को यहीं रहने दो। मैं चलती हूँ।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. ''प्रस्तुत अध्याय के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ज्यादा चतुराई भी इंसान को अकेला बना देती है।'' इस कथन से आप क्या समझते हैं? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्दों की पहचान करके लिखिए।

(क) खरगोश बहुत डरा हुआ था। ....

(ख) लोमड़ी एक चालाक जानवर है। ....

(ग) शेर का बुढ़ापा आ गया था। ....

(घ) लोमड़ी के दो-तीन बच्चे थे। ....

(ङ) खरगोश की बातों पर लोमड़ी को भरोसा हो गया था। ....

8. दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए।

विश्वास – ....   दयालु – ....

लाभ – ....   भय – ....

9. दिए गए उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए।

(क) अव – ....

(ख) अति – ....

(ग) ई – ....

(घ) अन् – ....

(ङ) सु – ....

10. दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द को लिखिए।

(क) जो सबका प्रिय हो – ....

(ख) जो दूर की सोचे – ....

(ग) जिसकी बुद्धि तेज हो – ....

(घ) जिसके मन में कपट न हो – ....

(ङ) जिसके पास धन न हो – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यदि लोमड़ी की जगह आप होते तो खरगोश से क्या संवाद करते? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. बुद्धि का प्रयोग कर मनुष्य हर विपत्ति का समाधान कैसे कर लेता है? अपने विचारों में अभिव्यक्त कीजिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. प्रस्तुत कहानी से आप क्या सीख लेते हैं? इस कहानी को आधार बनाकर आप किन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे? बताइए।

अध्याय 4

प्रिटोरिया जेल से
(पत्र)

अध्ययन से पूर्व

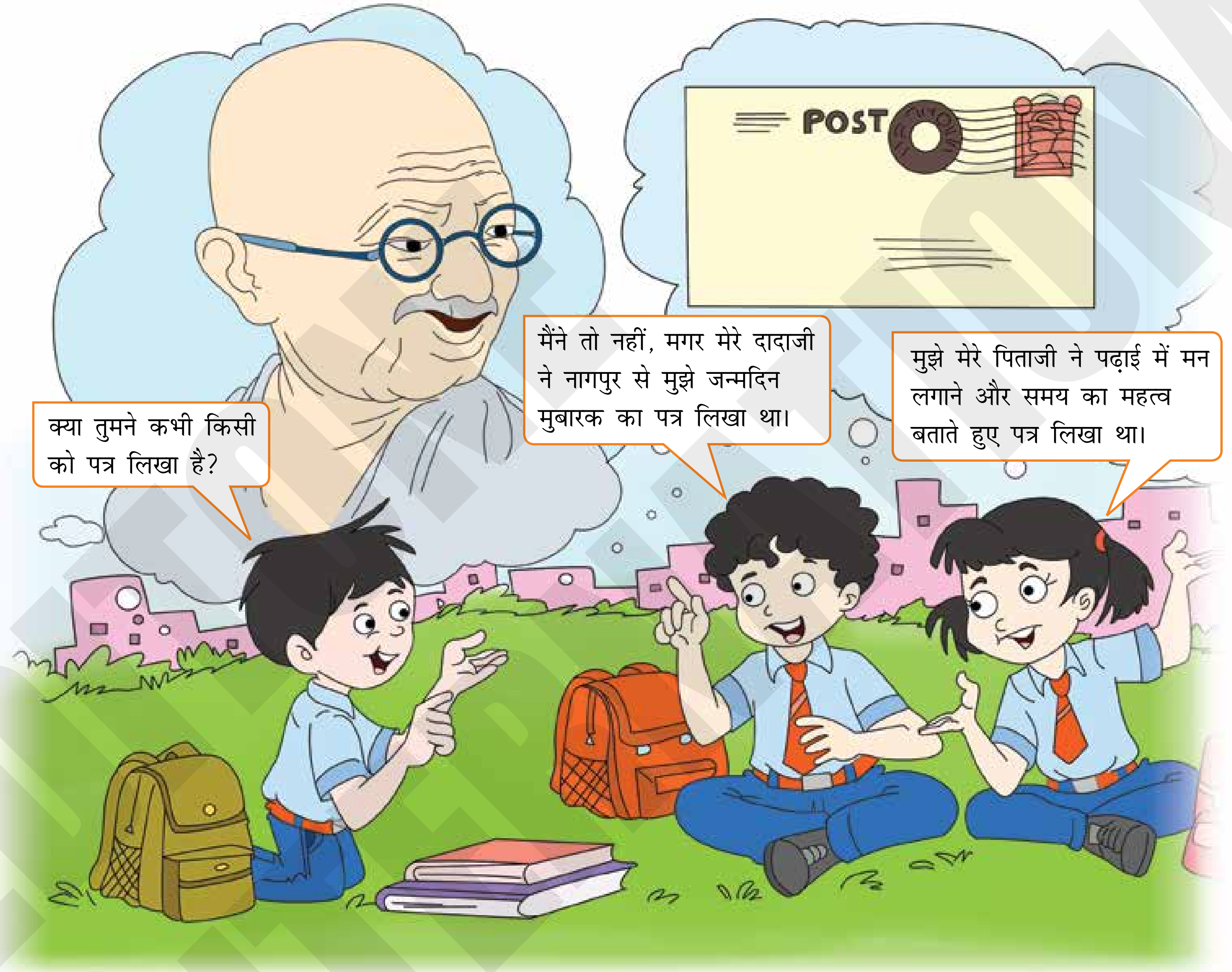

पत्र का मूल तत्व

बच्चों को समय एवं जीवन के मूल्य भाव से परिचित करवाना।

प्रिटोरिया जेल

25 मार्च 1909

प्रिय पुत्र,

मुझे प्रति माह एक पत्र लिखने एवं एक पत्र प्राप्त करने का अधिकार मिला है। अब मैं पत्र किसे लिखूँ? मुझे बारी-बारी से मिस्टर रीच, मिस्टर पॉल और तुम्हारा ख्याल आया, लेकिन मैंने तुम्हें ही लिखना पसंद किया क्योंकि पढ़ने के समय मुझे तुम्हारा ही ध्यान बराबर रहता है।

मेरे बारे में तुम ज़रा भी चिंता मत करना। विशेष कुछ कहने का अधिकार मुझे नहीं है। मैं पूर्णरूप से शांति से हूँ। आशा है कि 'बा' अच्छी हो गई होंगी। मुझे ज्ञात है कि तुम्हारे कुछ पत्र यहाँ आए हैं, लेकिन वे मुझे नहीं दिए गए। फिर भी डिप्टी गवर्नर की उदारता से मुझे मालूम हुआ की 'बा' का स्वास्थ्य सुधर रहा है। क्या वे चलने-फिरने लगीं? 'बा' और तुम लोग सवेरे दूध के साथ साबूदाना बराबर ले रहे होंगे और अब कुछ तुम्हारे विषय में कहना चाहूँगा। तुम कैसे हो? तुम पर मैंने जो जिम्मेदारी डाली है, तुम उसके सर्वथा योग्य हो और आनंद से उसे निभा रहे होगे, मुझे ऐसी आशा है।

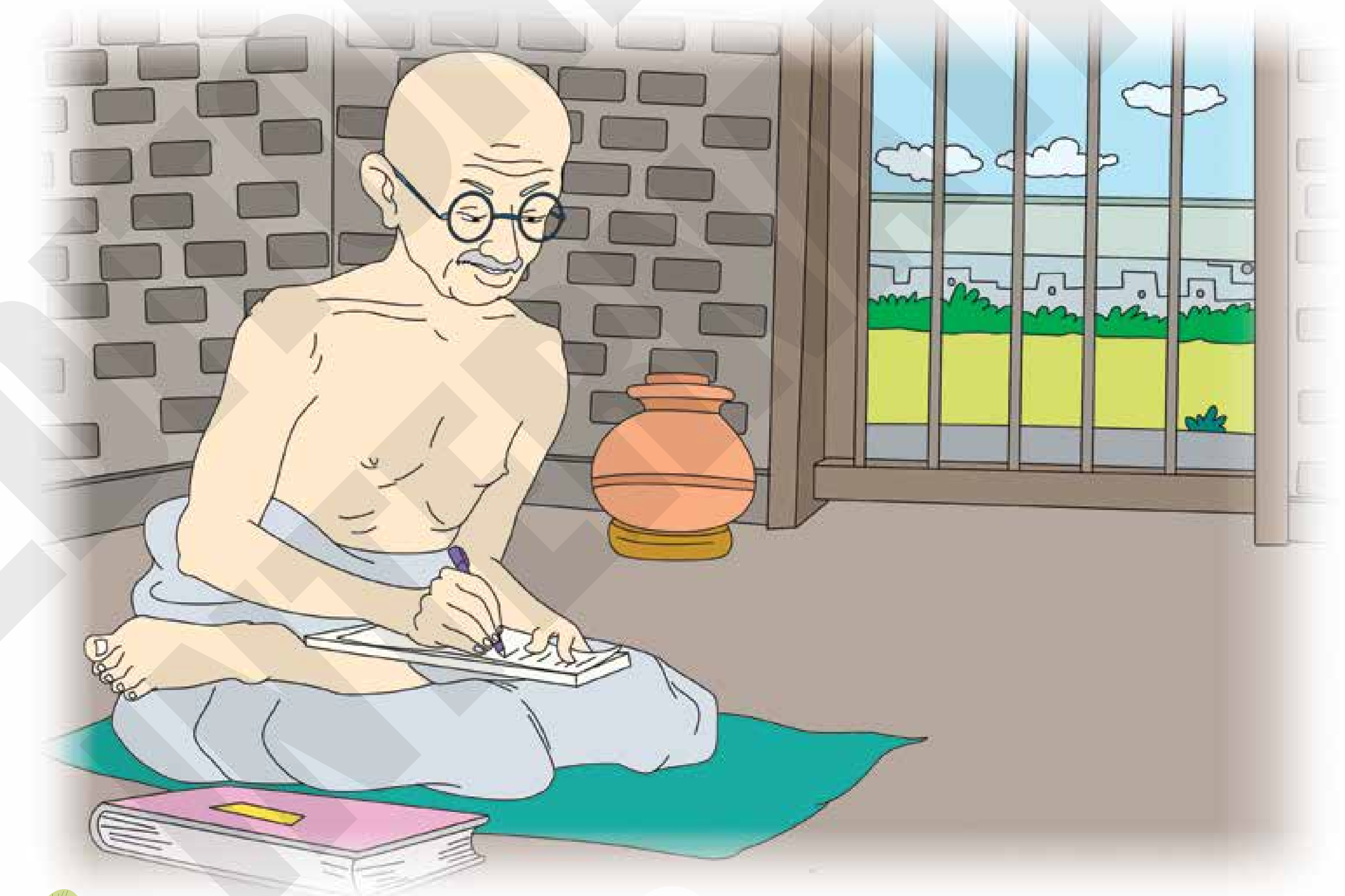

मैं यह जानता हूँ कि तुम्हें अपनी शिक्षा के प्रति असंतोष है। यहाँ जेल में मैंने खूब पढ़ा है। इससे मैं समझा हूँ कि केवल अक्षर-ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा तो चरित्र-निर्माण और कर्तव्य का ज्ञान है।

यदि यह दृष्टिकोण सही है तो मेरे विचार से तो यह बिल्कुल ठीक है कि तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। आजकल तुम्हें अपनी बीमार माँ की सेवा का अवसर मिला है। रामदास और देवदास को भी तुम सँभाल रहे हो, यदि तुम यह काम अच्छी तरह और आनंद से करते हो तो तुम्हारी आधी शिक्षा इसी के द्वारा पूरी हो जाती है।

उपनिषदों की एक टीका में लिखा है कि प्रथम अर्थात् ब्रह्मचर्य-आश्रम, संन्यास-आश्रम के समान है। इसका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देते हैं। बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को जिम्मेदारी और कर्तव्य का ज्ञान होना चाहिए। उन्हें अपने आचार और विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए और वे इसे भार समझकर नहीं करें, बल्कि एक आनंद का अनुभव करते हुए करें। यह आनंद कृत्रिम भी नहीं होना चाहिए। यह सरल और स्वाभाविक होना चाहिए।

मैं जब तुमसे काफी छोटा था तो मुझे स्वयं अपने पिताजी की सेवा करने में बहुत आनंद मिलता था। बारह वर्ष की आयु के बाद आमोद-प्रमोद का बहुत ही कम, बल्कि नहीं के समान ही अवसर मुझे मिला है।

संसार में तीन बातें बड़ी महत्वपूर्ण हैं। इनको प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे। ये तीन बातें हैं - अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना। इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हें अक्षर-ज्ञान नहीं मिलेगा। वह तो मिलेगा ही, लेकिन तुम उसी की चिंता करो, यह मैं नहीं चाहता। इसके लिए तुम्हारे पास अभी बहुत अधिक समय है। अक्षर-ज्ञान तो इसलिए होता है कि जो कुछ तुम्हें मिला है, उसे तुम दूसरों को दे सको।

इतना और याद रखना कि अब से हमें गरीबी में रहना है। जितना अधिक मैं विचार करता हूँ, उतना ही अधिक मुझे लगता है कि गरीबी में ही सुख है। अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है। खेत में घास और गड्ढे खोदने में पूरा समय देना। भविष्य में हमें अपना जीवन-निर्वाह इसी से करना है। मेरी इच्छा है कि अपने परिवार में तुम एक योग्य किसान बनो। सभी औज़ारों को सदा साफ़ और सुव्यवस्थित भी रखना।

अक्षर-ज्ञान में गणित और संस्कृत पर पूरा ध्यान देना। भविष्य में संस्कृत तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। ये दोनों विषय बड़ी उम्र में सीखना कठिन है। संगीत में भी रुचि बराबर रखना।

हिंदी, गुजराती और अंग्रेज़ी के चुने हुए भजनों एवं कविताओं का एक संग्रह तैयार करना चाहिए। वर्ष के अंत में तुम्हें अपना यह संग्रह मूल्यवान प्रतीत होगा। काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ? शांत चित्त से विचारपूर्वक तुमने यदि सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो वे तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे। तुमसे मुझे यह भी आशा है कि घर के लिए जो भी तुम खर्च करते हो, उसका पैसे-पैसे का हिसाब रखते हो।

मुझे यह भी आशा है कि तुम प्रतिदिन शाम को नियमपूर्वक प्रार्थना करते होगे और रविवार को श्री वेस्ट के यहाँ भी प्रार्थना में जाते होगे। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रयत्नपूर्वक एक निश्चित समय पर ही प्रार्थना करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हें अपने जीवन में आगे चलकर बड़ी सहायक सिद्ध होगी।

इस पत्र को पढ़कर, अच्छी तरह समझ लेने के बाद मुझे जवाब देना। जवाब जितना लंबा चाहो, उतना लिख सकते हो। अंत में, मैं प्रेम सहित यह पत्र समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा पिता

मोहनदास करमचंद गाँधी

शब्दार्थ

माह	= महीना	आमोद-प्रमोद	= खेल-कूद करना, मौज़ मस्ती
आशा	= उम्मीद	कृत्रिम	= नकली
प्रयास	= कोशिश	सद्गुण	= अच्छे गुण
जीवन-निर्वाह	= जीवन जीना	नियमितता	= लगातार
योग्य	= काबिल	संग्रह	= इकट्ठा करके रखना
चित्त	= मन	बा	= कस्तूरबा गाँधी का एक नाम

उच्चारण करें

आँचल	घबराकर	ध्यान	पत्तों
हँसकर	हृदय	कदंब	शहनाई

अध्यापन संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को गाँधी जी द्वारा जेल से लिखे जाने वाले अन्य पत्रों (जैसे बेतूल जेल से लिखा पत्र) का भी संज्ञान दें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।**

(क) गाँधी जी ने कौन सी जेल से पत्र लिखा?

(ख) गाँधी जी ने किसको पत्र लिखा?

(ग) गाँधी जी ने अपने पत्र में किसके स्वास्थ्य की बात पूछी?

(घ) गाँधी जी ने पत्र के अंत में अपना पूरा नाम क्या बताया?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) गाँधी जी को पत्र लिखते समय किन-किन व्यक्तियों का ख्याल आया?

....

(ख) गाँधी जी ने अपने पुत्र को पत्र लिखकर किस विषय के संबंध में सलाह दी?

....

(ग) 'अमीरी की तुलना में गरीबी सुखद है' इस कथन से गाँधी जी का क्या आशय था?

....

(घ) गाँधी जी ने अपने पुत्र को संसार की तीन किन महत्वपूर्ण बातों को बताया और क्यों?

....

3. **दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।**

(क) अक्षर ज्ञान संपूर्ण ज्ञान नहीं है। ☐

(ख) गाँधी जी ने प्रस्तुत पत्र जेलर को लिखा। ☐

(ग) आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देते हैं। ☐

(घ) गाँधी जी को जेल में अनेकों पत्र लिखने और प्राप्त पत्र को पढ़ने का अधिकार था। ☐

4. **किसने कहा, किससे कहा?**

(क) बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को अपने आचार और विचार में सत्य और अहिंसा का प्रयोग करना चाहिए।

....

(ख) भविष्य में संस्कृत तुम्हारे लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

....

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. गाँधी जी ने अक्षर ज्ञान को संपूर्ण शिक्षा न कहकर, चरित्र व कर्तव्य ज्ञान को सच्ची एवं संपूर्ण शिक्षा क्यों कहा है? कक्षा में विचार-विमर्श करते हुए लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए।

(क) नीव्राह – .... (ख) न्यिमीत्ता – ....

(ग) मुलय्वान – .... (घ) संगृह – ....

8. दिए गए शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

(क) अहिंसा – ....

(ख) कर्तव्य – ....

(ग) स्वास्थ्य – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

9. आपके अनुसार सच्ची शिक्षा क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

10. हमें गाँधी जी के किन वचनों का अनुसरण करना चाहिए? कक्षा में चर्चा कर लिखिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. महात्मा गाँधी जी द्वारा कौन-कौन से आंदोलन चलाए गए व आंदोलन के मुद्दे किस से संबंधित थे? बताइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

12. गाँधी जी ने सदैव सत्य एवं अहिंसा का मार्ग चुना। आप अपने जीवन में गाँधी जी द्वारा बताए किन मूल्यों को अपनाएँगे?

अध्याय 5

चाँद का कुरता
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

कविता द्वारा माँ और उसके बच्चे के बीच के भावात्मक पक्षों को उजागर करना।

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफ़र और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो, कुरता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, अरे सलोने,
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता बढ़ता रोज़, किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवायें,
सीं दें एक झिंगोला जो हर दिन बदन में आए।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

हठ	=	ज़िद	ठिठुरना	=	काँपना
सफ़र	=	यात्रा	जाड़ा	=	ठंड
सलोने	=	प्यारे	अंगुल	=	अंगुली
झिंगोला	=	ढीला-ढाला वस्त्र			

उच्चारण करें

दिखलाई ठिठुर यात्रा कुरता कुशल

अध्यापन संवेफत

कविता के माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका चाँद और उसकी माँ के बीच हुई वार्तालाप के सभी महत्वपूर्ण पक्षों को बच्चों को बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) चाँद किससे बात कर रहा है?

(ख) चाँद अपनी माँ से क्या माँग रहा है?

(ग) चाँद का सफ़र कहाँ होता है?

(घ) चाँद माँ से भाड़े पर क्या लाने को बोल रहा है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) चाँद किस मौसम में ठिठुरने की बात कर रहा है?

....

(ख) चाँद की माँ को किस बात का भय है?

....

(ग) चाँद की माँ, चाँद को क्या समझा रही है?

....

(घ) प्रस्तुत कविता का नाम और कवि का नाम लिखिए।

....

2. मिलान कीजिए।

(क) मौसम	प्यारे
(ख) सलोने	कुरता
(ग) झिंगोला	हवा
(घ) सन-सन	जाड़ा

3. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) चाँद ने मोटे कपड़े का झिंगोला माँगा। ☐

(ख) माँ ने चाँद को गुस्से में डाँट दिया। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. चाँद यदि गर्मी के मौसम की बात माँ से करता तो वह माँ से क्या माँगता? माँ उसे कैसे समझाती? कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. दिए गए शब्दों में से संज्ञा एवं विशेषण शब्दों को अलग-अलग कीजिए।

मोटा	घटता	ऊन	भगवान	आँख	चौड़ा	नाप	आसमान	बढ़ता	ठंड	कुरता

संज्ञा शब्द	विशेषण शब्द
....	....
....	....
....	....
....	....

7. दिए गए 'धातु' रूप से क्रिया शब्द बनाइए।

(क) चल – .... (ख) डर – ....

(ग) पड़ – .... (घ) कर – ....

(ङ) सुन – .... (च) देख – ....

8. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) यात्रा – ....

(ख) कुशल – ....

(ग) मौसम – ....

(घ) अंगुल – ....

(ङ) झिंगोला – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

9. चाँद और माँ के बीच चल रही बातचीत को आप आगे बढ़ाइए।

चाँद – क्या माँ, आप हर बार ऐसे ही फुसला देती हो।

माँ – क्या करूँ, मैं तो थक गई तेरे कपड़े सिलवा-सिलवा कर।

चाँद – ....

माँ – ....

चाँद – ....

माँ – ....

10. झिंगोले संबंधी माँग आपके अनुसार उचित थी या अनुचित और क्यों? कक्षा में विचार-विमर्श कर पाँच वाक्य लिखिए।

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. चाँद का आकार किस अवधि काल में बढ़ता या घटता है तथा उस अवधि में चाँद का स्वरूप कैसा दिखाई पड़ता है? चित्र के माध्यम से बताइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

12. परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना ही जीवन जीने की सही कला है। विपरीत परिस्थितियाँ आने पर आप किन मूल्यों का साथ जीवन में नहीं छोड़ेंगे? बताइए।

अध्याय 6

ईमानदारी का परिचय
(एकांकी)

अध्ययन से पूर्व

एकांकी का मूल तत्व

बच्चों को ईमानदारी का महत्व समझाते हुए उन्हें इस गुण को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करना।

पात्र : सोनू (एक बालक 9-10 वर्ष का), रामेश्वर (व्यक्ति), सोहन (व्यक्ति), मीनू (सोनू का भाई), डॉ. शर्मा।

(पहला दृश्य)

(सोनू बाज़ार में ठेले पर सब्ज़ियाँ रख उन्हें बेचने का प्रयत्न कर रहा है।)

सोनू : सब्ज़ी ले लो, हरी-ताज़ी सब्ज़ी ले लो।

(इतने में सोनू को रामेश्वर दिखाई देते हैं।)

सोनू : ले लो साहब, सब्ज़ी ले लो, हरी-ताज़ी सब्ज़ी ले लो।

रामेश्वर : नहीं भाई, कुछ नहीं चाहिए।

सोनू : (रुआँसा-सा होकर) साहब, सुबह से अब तक कुछ नहीं बिका। कुछ तो ले लीजिए।

रामेश्वर : (जेब से पैसे निकालकर) तुम तो..... अच्छा चलो, ये पैसे लो और जाओ।

सोनू : (एकदम से) नहीं साहब, नहीं ! मैं पैसे नहीं लूँगा। यह तो भीख है और मैं भीख नहीं लेता। आप पहले सब्ज़ी खरीदें फिर पैसे दें।

रामेश्वर : भाई, मुझे सब्ज़ी की फिलहाल तो जरूरत नहीं है और मेरे पास खुले पैसे भी नहीं हैं, जो सब्ज़ी खरीद लूँ।

सोनू : खुले पैसे की चिंता आप मत कीजिए। आप बस सब्ज़ी खरीदें, बाकी काम मेरा है!

(सोनू खुले पैसों के लिए जाता है। कुछ समय बीतने पर रामेश्वर उत्सुक होकर बाज़ार की ओर देखते हैं तभी उनका एक परिचित सोहन उन्हें देखकर ठहर जाता है।)

सोहन : अरे! भाई रामेश्वर तुम तो ईद का चाँद ही हो गए। यहाँ क्यो लेने चले आए?

रामेश्वर : भाई, एक लड़का सुबह से सब्ज़ी का ठेला लिए खड़ा है मगर कुछ बिका नहीं, तो वह मुझे बोला सब्ज़ी खरीद लो। मैंने तो उसे समझाया कि मेरे पास खुले पैसे नहीं है पर वो माना ही नहीं और पैसे खुले करवाने गया है। मुझे यहाँ खड़ा रहने को बोल कर गया है। दस मिनट हो गए पता नहीं कहाँ चला गया, अब तक नहीं आया।

सोहन : लो कर लो बात, हो गया वो नौ दो ग्यारह। कौन जाने ये ठेला उसका है भी या नहीं। किसी के ठेले को अपना बता कर तुम्हें यहाँ खड़ा कर गया और तुमसे पैसे भी ले गया।

रामेश्वर : पर भाई ! वह लड़का ठग तो नहीं लग रहा था। चलो कोई बात नहीं। समझेंगे आज एक नया पाठ पढ़ा।

(दोनों वहाँ से जाते हैं।)

(दूसरा दृश्य)

(सोनू लौटकर आता है परंतु वहाँ रामेश्वर को न पाकर परेशान हो रहा है।)

मोनू : (सोनू से) क्यों भाई ! किसे ढूँढ रहे हो?

सोनू : जो यहाँ ठेले के पास व्यक्ति खड़े थे, उन्हें ही ढूँढ रहा हूँ।

मोनू : वे तो अपने दोस्त के साथ सामने वाले टी–स्टॉल के अंदर गए हैं।

(सोनू टी–स्टॉल के अंदर जाता है।)

रामेश्वर : अरे! कहाँ गायब हो गए थे? मैंने तो सोचा मेरे पैसे डूब गए।

सोनू : साहब! मैं गरीब जरूर हूँ मगर बेईमान नहीं।

रामेश्वर : तुम्हारे घर में कौन–कौन हैं ?

सोनू : कोई नहीं। मैं और मेरा भाई, वही मेरा एकमात्र सहारा है। दंगों के दिनों में हमारे माँ–बाप को किसी ने मार डाला।

(रो पड़ता है।)

रामेश्वर : रो मत बेटा! मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ। (अंदर की ओर पुकारकर) अमर सिंह! मैं टिहरी बस्ती जा रहा हूँ। वापस लौटकर तुम्हारा हिसाब करता हूँ। अभी सोनू और उसके भाई से घर जाकर कुछ बात करना चाहता हूँ।

(सोनू को साथ लेकर जाता है।)

(तीसरा दृश्य)

(**स्थान–** सोनू का घर। जहाँ सोनू का भाई बीमार पड़ा है।)

सोनू : बुखार कैसा है? दवा नहीं तो क्या आराम मिलेगा?

मोनू : भाई! तुम मेरे लिए कितना कष्ट उठाते हो!

रामेश्वर : तुम चिंता मत करो बेटा! अभी डॉक्टर को बुलाया है वो आते ही होंगे।

(सोनू के घर डॉक्टर का प्रवेश)

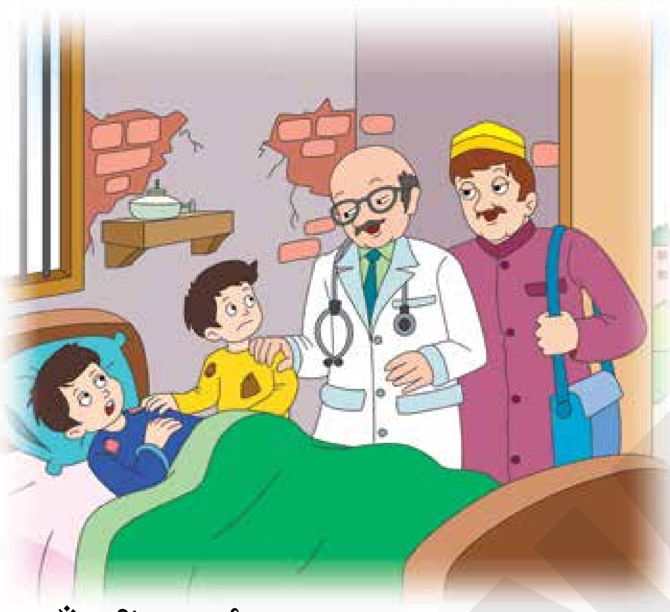

रामेश्वर : आइए डॉक्टर साहब, ये रहा मोनू।

मोनू : भाई! ये तो बहुत फीस लेंगे। हमारे पास इतने पैसे कहाँ हैं?

रामेश्वर : उस बात की चिंता न करो, बेटा! तुम ठीक हो जाओगे।

डॉक्टर : रामेश्वर जी! आप यहाँ कैसे चले आए?

रामेश्वर : साहब! इस लड़के की ईमानदारी मुझे यहाँ खींच लाई।

डॉक्टर : वो कैसे?

रामेश्वर : वो एक लंबा किस्सा है लौटते समय सुनाऊँगा। फिलहाल तुम हमारे मोनू को जल्द ठीक कर दो।

सोनू : साहब! बहुत शुक्रिया। आप न होते तो न आज कुछ बिक्री होती न मेरे भाई की दवाई। आप सच में एक नेक इंसान हैं।

शब्दार्थ

प्रयत्न	= कोशिश	परिचित	= जान पहचान वाले
रूआँसा	= रोने का भाव	उत्सुक	= जिज्ञासु
कष्ट	= तकलीफ	किस्सा	= कहानी

उच्चारण करें

गिड़गिड़ाकर   टी-स्टॉल   अलविदा   ईमानदारी   बेईमान   शुक्रिया

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका पूरे हाव-भाव के साथ एकांकी बच्चों को सुनाएँ एवं ईमानदारी के अलावा पाठ में आने वाले अन्य व्यवहारिक गुण जैसे- विश्वास, सहायता करना आदि पर भी चर्चा करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) सोनू क्या बेच रहा था?

(ख) रामेश्वर ने सोनू को क्या देना चाहा?

(ग) सोनू के भाई का क्या नाम था?

(घ) रामेश्वर सोनू के साथ कहाँ गया?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सोनू की स्थिति कैसी थी?

....

(ख) सोनू के भीतर किस प्रकार का गुण था?

....

(ग) रामेश्वर ने सोनू की मदद किस प्रकार की?

....

(घ) रामेश्वर को सोनू की ईमानदारी का पता कैसे चला?

....

3. सही शब्द चुनकर वाक्यों में रिक्त स्थान भरिए।

कष्ट	बेईमान	ठग	भीख	पैसे

(क) यह तो .... है और मैं .... नहीं लेता।

(ख) खुले .... की चिंता आप मत कीजिए।

(ग) वह लड़का .... तो नहीं लग रहा था।

(घ) मैं गरीब जरूर हूँ मगर .... नहीं।

(ङ) तुम मेरे लिए कितना .... उठाते हो।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. 'ईमानदारी' की तरह अन्य और कौन-से गुण हैं जो हमारे व्यक्तित्व की आधारशिला का निर्माण करते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए और उन गुणों के नाम लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

5. दिए गए मुहावरों का अर्थ लिखते हुए वाक्य बनाइए।

(क) अंधे की लाठी - ....

(ख) ईद का चाँद होना - ....

(ग) नौ-दो ग्यारह होना- ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

6. "सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले लोगों की कभी हार नहीं होती।" इस कथन से आप कितना सहमत हैं? कक्षा में विचार-विमर्श कर लिखिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

7. पहिए में कुछ शब्द लिखे गए हैं, जो बीच में लिखे शब्द के अर्थ प्रकट करते हैं। प्रत्येक पहिए में एक गलत शब्द है। उसे पहचानिए और चिह्नित कीजिए।

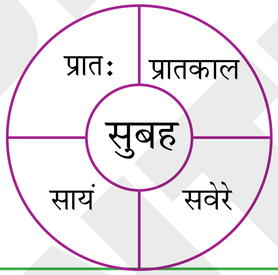

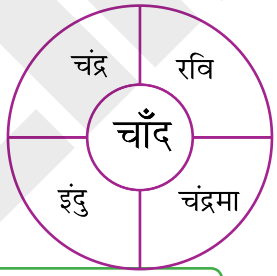

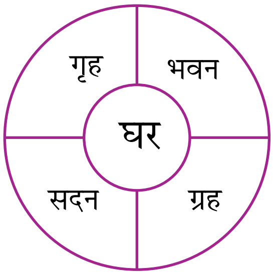

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

8. ईमानदारी अच्छे चरित्र का निर्माण करती है। इस गुण के अलावा और किन-किन गुणों को अपनाकर स्वयं को बेहतर भविष्य हेतु तैयार किया जा सकता है?

अध्याय 7

भारत में हॉकी
(निबंध)

अध्ययन से पूर्व

धनराज पिल्लै

संदीप सिंह

दीपक ठाकुर

रानी रामपाल

वंदना कटारिया

गुरजीत कौर

- उपरोक्त खिलाड़ियों को ध्यानपूर्वक देखिए। उनके नाम व चित्र की सहायता से उनके संबंध में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ एकत्रित कीजिए।

निबंध का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में खेल के महत्व को दर्शाया गया है और यह बताने का प्रयास किया गया है कि मानव जीवन का एक अभिन्न अंग खेल है। साथ ही हॉकी खेल से जुड़ी समस्त जानकारियों को भी पाठ में उपलब्ध कराया गया है।

खेल मनुष्य के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भी सच है कि मनुष्य अपने प्राकृतिक स्वभाव से ही खिलाड़ी होता है। खेल से शारीरिक विकार का निवारण होता है और शरीर स्फूर्तिमान बनता है। खिलाड़ी स्वयं में एक रणनीतिकार होता है और वह अपनी कुशल रणनीतियों के द्वारा अपनी पराजय को विजय में बदल सकता है। परंतु खेल-जगत में हुई पराजय भी मधुर होती है। खेलों से मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास होता है। अतः मानव स्वास्थ्य के लिए खेल-कूद को अति आवश्यक माना गया है

हॉकी, भारत का एक अति प्राचीन खेल है। एक समय तो ऐसा था जब हॉकी में भारतवर्ष का स्थान विश्व में सबसे ऊपर था। हॉकी के इतिहास में आज भी भारत के महानतम खिलाड़ी ध्यानचंद को याद किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि भारत ने हॉकी के खेल को इंग्लैंड से अपनाया था, और देखते ही देखते यह हमारा राष्ट्रीय खेल बन गया। विश्व में भारत को अनेक क्षेत्रों में प्रसिद्धि मिली है जिसमें से हॉकी भी एक है।

भारत में सन् 1925 में "भारतीय हॉकी संघ" की स्थापना की गई थी।

यूनान (ग्रीस) देश के ओलंपस पर्वत के नाम पर संसार में 'ओलंपिक' खेल प्रतियोगिता का आयोजन प्रत्येक चौथे वर्ष किया जाता है। इस प्रतियोगिता में भारत के हॉकी टीम ने सन् 1928 ई. से सन् 1956 ई. तक छः बार विश्वविजेता होने का गौरव प्राप्त किया है। सन् 1960 ई. में पाकिस्तान ने भारत पर विजय प्राप्त की, परंतु सन् 1964 ई. में होने वाली प्रतियोगिता में भारत ने पुनः अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त कर लिया।

ओलंपिक प्रतियोगिता में पहली बार सन् 1928 में भारत हॉकी के मैदान में उतरा था। प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद ने संसार के बहुत-से देशों के हॉकी दलों को पराजित करके भारत की विजय-पताका फहरायी थी, तभी से ध्यानचंद "हॉकी का जादूगर" नाम से प्रसिद्ध हुए। मेजर ध्यानचंद की खेल-प्रतिभा ने जर्मन तानाशाह हिटलर का दिल भी जीत लिया था। हिटलर ने उनके खेल से प्रभावित होकर उनके विषय में कहा था-"यदि ध्यानचंद जर्मनी आ जाए, तो मैं उसे मेजर से मार्शल बना दूँगा।" भारत के बलबीर सिंह सन् 1952 ई. में हेलसिंकी में आयोजित ओलंपिक प्रतियोगिता में विश्व के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित हुए थे। रूपसिंह, किशनलाल, बाबू दिग्विजय सिंह

आदि खिलाड़ियों को पूरा विश्व आज भी याद करता है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय हॉकी के विकास की गति में तेज़ी आई है। इससे भारत में इस खेल के भविष्य पर छाए काले बादल छँट गए हैं।

भारत देश में आज भी धनराज पिल्लै जैसे अनुभवी व दक्ष खिलाड़ी हैं। वे देश के नवयुवकों को हॉकी का प्रशिक्षण देकर एक सशक्त और मजबूत दल तैयार कर सकते हैं।

संसार में अपने हॉकी के कीर्तिमान को बनाए रखने के लिए भारतीय विद्यालयों में हॉकी का खेल अनिवार्य कर देना चाहिए। इससे देश में हॉकी खेल के विकास के साथ-साथ बालकों का शरीर भी हृष्ट-पुष्ट बनेगा।

शब्दार्थ

स्वभाव	=	हावभाव	प्रतिभा	=	विलक्षण बुद्धि
पराजय	=	हार	प्रसिद्ध	=	मशहूर
निवारण	=	दूर करना, रोकना	बौद्धिक	=	बुद्धि/विचार के स्तर पर
आयोजन	=	प्रबंध, बंदोबस्त	दक्ष	=	निपुण, कुशल

उच्चारण करें

सर्वश्रेष्ठ   प्रतियोगिता   कीर्तिमान   हृष्ट-पुष्ट   पिल्लै

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों के साथ भारत के राष्ट्रीय खेल 'हॉकी' पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें तथा उन्हें खेलों के प्रति प्रोत्साहित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।**

(क) भारत का राष्ट्रीय खेल क्या है?

(ख) 'हॉकी का जादूगर' किसे कहा जाता है?

(ग) 'भारतीय हॉकी संघ' की स्थापना कब हुई थी?

(घ) ओलंपिक खेलों का आयोजन कितने वर्षों के उपरांत किया जाता है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) खेल मानव जीवन हेतु क्यों महत्वपूर्ण है?

....

(ख) मेज़र ध्यानचंद के खेल से प्रभावित होकर हिटलर ने क्या कहा था?

....

(ग) कुछ प्रमुख हॉकी खिलाड़ियों के नाम लिखिए।

....

(घ) हॉकी स्पर्धा में भारत के ओलंपिक सफ़र को अपने शब्दों में लिखिए।

....

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।**

(क) हॉकी, भारत का एक नवीनतम खेल है। ☐

(ख) ओलंपस पर्वत इटली में स्थित है। ☐

(ग) ओलंपिक में भारत ने हॉकी स्पर्धा में 1928 से 1956 ई. तक छः बार विश्वविजेता बनने के सपने को पूरा किया। ☐

(घ) बलबीर सिंह भारत के प्रसिद्ध भाला फेंक प्रतियोगिता के खिलाड़ी हैं। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

3. हॉकी खेल की कुल समयावधि कितनी होती है? हॉकी के अलावा ऐसे कौन-कौन से खेल है जो हॉकी से कम समयावधि में समाप्त होते हैं? सोचकर बताइए और एक सूची तैयार कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

4. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) महानतम – ....

(ख) मानसिक – ....

(ग) बौद्‌धिक – ....

(घ) पराजय – ....

5. नीचे दिए गए प्रत्यय शब्दों से सार्थक शब्दों का निर्माण कीजिए।

(क) ता – .... (ख) इक – ....

(ग) आई – .... (घ) पट – ....

(ङ) हट – .... (च) पन – ....

6. नीचे दिए गए मुहावरों का अर्थ लिखिए।

(क) दाँत खट्टे करना – ....

(ख) ईद का चाँद होना – ....

(ग) कानाफूसी करना – ....

(घ) कान भरना – ....

7. नीचे दिए गए दो पदों के बीच से कारक चिह्नों का लोप कर समास का उदाहरण दीजिए।

(क) राजा का पुत्र – ....

(ख) जन को प्रिय – ....

(ग) स्व द्‌वारा रचित – ....

(घ) विश्राम के लिए गृह – ....

(ङ) राजा की नीति – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

8. 'हमारा राष्ट्रीय खेल' विषय पर एक संक्षिप्त निबंध तैयार कीजिए।

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

9. नीचे दिए गए दृश्यों को देखकर उन पर सही क्रम लिखिए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

10. खेल-कूद के महत्व को बताते हुए मानव जीवन पर पड़ने वाले उसके प्रभावों की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

अध्याय 8

मुक्ति की आकांक्षा
(कविता)

अध्ययन से पूर्व

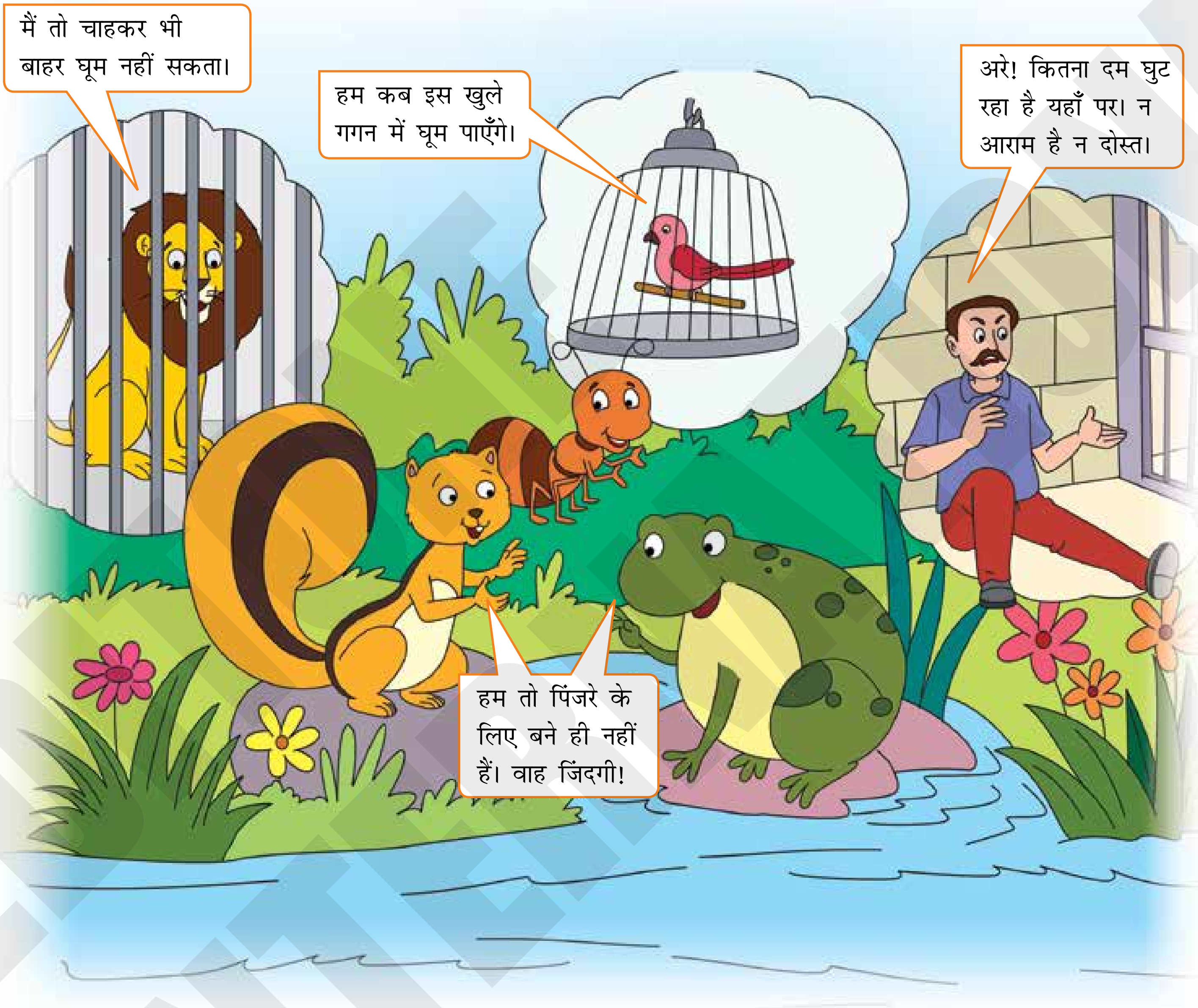

कविता का मूल तत्व

पराधीन जीवन को उन्मुक्त आकाश में स्वतंत्रता के साथ उड़ने का भाव कविता में दर्शाया गया है।

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बहुत बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उन्हें
अपनी जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।

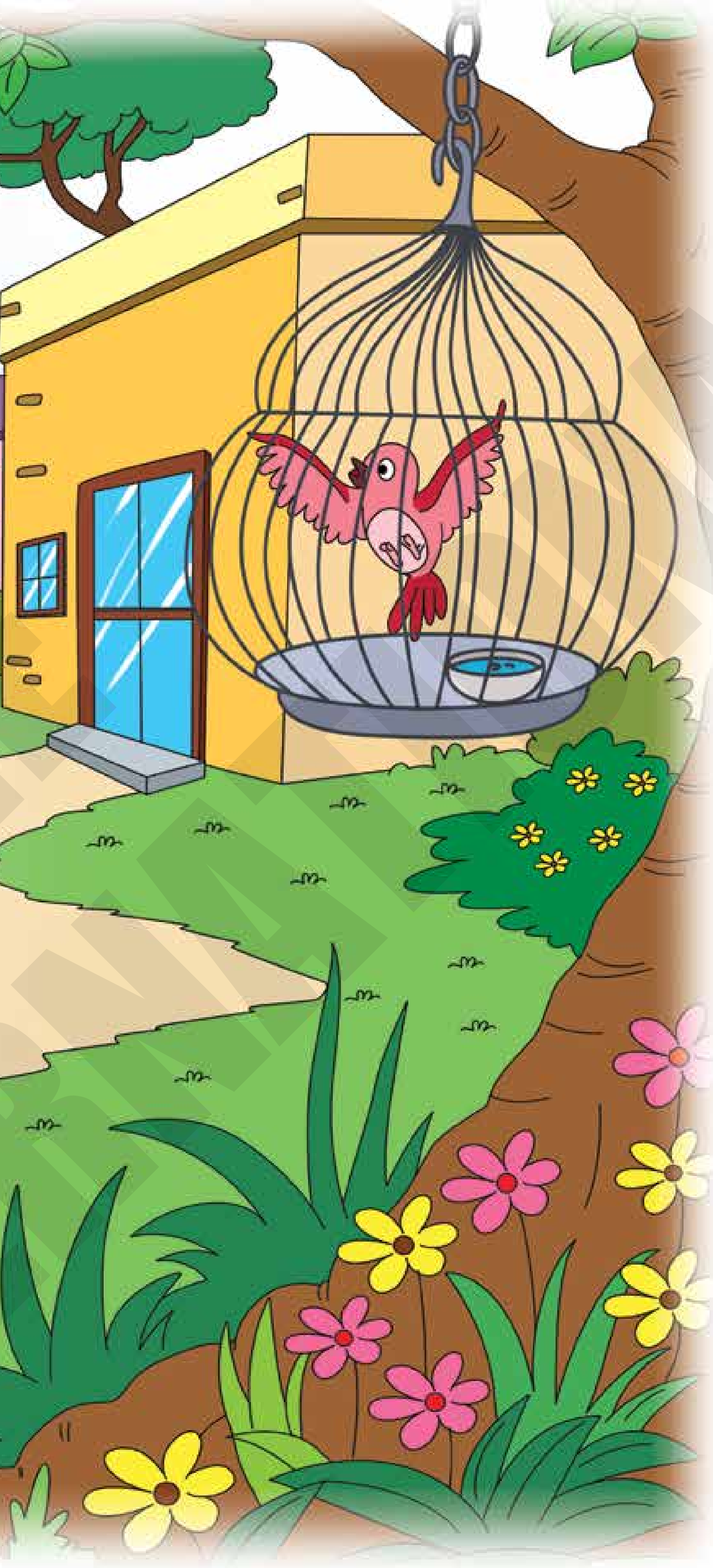

यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।

बाहर दाने का टोटा है,
यहाँ चुग्गा मोटा है।

बाहर बहेलिए का डर है,
यहाँ निर्द्वंद्व कंठ-स्वर है।

फिर भी चिड़िया
मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी,
पिंजरे में से जितना अंग निकल सकेगा, निकालेगी,
हरसूँ ज़ोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

शब्दार्थ

निर्मम	=	मोह रहित	निर्द्वंद्व	=	स्वच्छंद
आशंका	=	संदेह	कंठ	=	गला
आकांक्षा	=	इच्छा	अंग	=	शरीर का भाग
मुक्ति	=	आज़ादी	गटकना	=	पीना

उच्चारण करें

बहेलिए जिस्म समुद्र गटकना हरसूँ

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कविता के माध्यम से बच्चों को आज़ादी का महत्व समझाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पिंजड़ा टूटने या खुलने पर किसका भय होगा?

(ख) पिंजड़े में मोटा क्या है?

(ग) चिड़िया कैसा गाना गाएगी?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) 'मुक्ति का गाना' चिड़िया किसके लिए गा रही है और क्यों?

....

(ख) प्रस्तुत कविता में किसको लाख बार समझाया जा रहा है और क्यों?

....

(ग) प्रस्तुत कविता किस कवि की रचना है?

....

3. मिलान कीजिए।

(क) चुग्गा	स्वर
(ख) गाएगी	धरती
(ग) निर्मम	डर
(घ) बहेलिए	मोटा

4. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए।

बाहर ....,

.... कंठ-स्वर है।

फिर ....,

.... गाएगी।

5. **दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए।**

(क) मुक्ति का गाना चिड़िया द्वारा गया जाएगा। ☐

(ख) चिड़िया हरसूँ ज़ोर लगाएगी। ☐

(ग) पिंजड़ा टूटने या खुलने का डर चिड़िया को सता रहा है। ☐

(घ) चिड़िया को गुलामी की आकांक्षा है। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

6. **'मुक्ति की आकांक्षा' कविता से किस भाव की उत्पति हो रही है? कक्षा में चर्चा करते हुए लिखिए।**

7. **यदि चिड़िया को बहेलिए का डर न होता, तो वह अन्य कौन-सी आकांक्षा के साथ गगन में विचरण करती? सोचकर लिखिए।**

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. **दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।**

(क) पिंजड़ा – ....

(ख) बहेलिया – ....

(ग) भटकना – ....

(घ) निर्मम – ....

9. **दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।**

(क) झरना – ....

(ख) समुद्र – ....

(ग) हवा – ....

(घ) पानी – ....

10. **दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए।**

(क) डर – .... (ख) बाहर – ....

(ग) मोटा – .... (घ) भरा – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. प्रस्तुत कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

12. यदि चिड़िया की जगह आप पिंजड़े में बंद होते तो कल्पना के आधार पर सोचकर बताइए कि आप 'मुक्ति' के लिए क्या-क्या उपाय करते?

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

13. चिड़िया के किन गुणों ने आपको प्रभावित किया? चर्चा कर बताइए।

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

14. 'मुक्ति' हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है, यह हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के कार्यों से पता चलता है। हमारे क्रांतिकारियों ने मुक्ति हेतु क्या-क्या प्रयत्न किए? बताइए।

अध्याय 9

लाला लाजपत राय
(जीवनी)

अध्ययन से पूर्व

वीर कुँवर सिंह

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राजकुमार शुक्ल

स्वामी सहजानंद सरस्वती

भगत सिंह

चन्द्रशेखर आजाद

- उपरोक्त चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और उनमें लिखे गए नामों को सावधानीपूर्वक पढ़कर उनके संबंध में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियों को इकट्ठा कीजिए। जानकारी को आधार बनाकर संक्षिप्त टिप्पणी तैयार कीजिए।

जीवनी का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में भारत के प्रमुख क्रांतिकारियों में शामिल लाला लाजपत राय का जीवन-परिचय दिया गया है।

"मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेज़ी हुकूमत के कफ़न में अंतिम कील साबित होगी।" यह भविष्यवाणी कर स्वदेश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देश की युवा पीढ़ी में नई स्फूर्ति व शक्ति का संचार करने वाले महान् स्वतंत्रता सेनानी और पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1866 को पंजाब के जगरॉव के समीप स्थित ढुडी गाँव में हुआ। उनके पिता श्री राधाकृष्ण जी अध्यापन का कार्य करते थे और शुद्ध विचारों वाले धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, जिसका संपूर्ण प्रभाव उनके बालक लाजपत राय पर पड़ा।

लाला जी की उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। वकालत पास करने के बाद वह हिसार में जाकर वकालत करने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भाग लेने लगे और अनेक वर्ष वहाँ के म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष रहे। कड़ी मेहनत और पूर्ण ईमानदारी की वजह से वकालत में उन्हें काफ़ी प्रसिद्धि प्राप्त हुई, जिसके कारण वह हिसार छोड़कर लाहौर आ गए जो उन दिनों क्रांतिकारियों का गढ़ था। यहाँ पहुँचकर भी वह अपने उच्च चरित्र तथा दयालु स्वभाव के कारण सदैव गरीब, पिछड़ों और ज़रूरतमंदों की मदद के लिए आगे रहे। बंगाल में पड़े भयंकर अकाल में लोगों की मदद के लिए उन्होंने गाँव-गाँव घूमकर धन इकट्ठा किया। उसके उपरांत देश की आज़ादी के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे जिसके कारण अंग्रेज़ों ने उन्हें गिरफ़्तार कर मांडले जेल भेज दिया। वहाँ से छूटने के बाद 1914 में कांग्रेस के एक डैपुटेशन में इंग्लैंड गए और वहाँ से जापान चले गए।

इसी दौरान प्रथम विश्वयुद्ध प्रारंभ हो जाने पर अंग्रेज़ सरकार द्वारा इनके भारत आने पर रोक लगाने के कारण लाजपत राय जापान से अमेरिका चले गए और वहाँ रहकर देश को आज़ाद करवाने के लिए पूर्ण प्रयास करने लगे।

प्रथम विश्वयदुध् की समाप्ति पर भारत लौट कर उन्होंने उन दिनों चल रहे असहयोग आंदोलन में सक्रियता से भाग लिया तथा कांग्रेस में वरिष्ठ नेता के रूप में स्थान बनाया एवं कोलकाता कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए।

लाहौर आकर फिर से देश को आज़ाद करवाने के लिए पूरी तरह से सक्रिय हो गए। क्रांतिकारी गतिविधियों के साथ-साथ युवाओं को शिक्षित करने के लिए अपने पास से चालीस हज़ार रुपए देकर अपने मित्र महात्मा हंसराज के सहयोग से लाहौर में दयानंद एंग्लो विश्वविद्यालय की स्थापना की, जहाँ युवाओं में देश प्यार का जज्बा भरा जाने लगा।

लाला जी सदैव ही अंग्रेज़ों की दमनकारी नीतियों का विरोध बहुत जोश से करते थे और यही कारण था कि 1928 में देशवासियों पर काला कानून लादने की अंग्रेज़ों की कोशिश का लाहौर में विरोध का 64 वर्षीय लाला जी ने स्वयं नेतृत्व करने का फैसला किया। 30 अक्टूबर के दिन साइमन कमीशन के लाहौर पहुँचने पर लाला जी के नेतृत्व में हज़ारों देशवासियों ने बहुत बड़ा जुलूस निकाल स्टेशन पर साइमन कमीशन का "साइमन गो बैक" के नारों से स्वागत किया। जिससे नाराज होकर पुलिस कप्तान स्कॉट ने लाठीचार्ज का आदेश देकर खुद लाला जी पर लाठियाँ बरसाईं जिससे वह बुरी तरह से जख्मी हो गए और 17 नवंबर, 1928 के दिन देश की आज़ादी के लिए लड़ने वाले इस शूरवीर ने स्वतंत्रता संग्राम रूपी हवन यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति डाल दी। इन्हीं जैसे महान् क्रांतिकारियों के बलिदानों की बदौलत आज हम आज़ादी के मीठे फल चख रहे हैं।

शब्दार्थ

हुकूमत	= शासन	वरिष्ठ	= श्रेष्ठ
न्योछावर	= बलिदान	जज्बा	= जोश
प्रवृत्ति	= मन का किसी विषय की ओर झुकाव	नेतृत्व	= अगुवाई, संचालन
डैपुटेशन	= प्रतिनिधि मंडल, शिष्टमंडल	आहुति	= बलि

उच्चारण करें

सक्रियता   दमनकारी   एंग्लो   म्युनिसिपल   क्रांतिकारी

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को लाला लाजपत राय की जीवनी सुनाएँ तथा उनके जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर बच्चों में देशभक्ति और स्वावलंबी जैसे गुणों का प्रसार करने का प्रयास करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'पंजाब केसरी' किसे कहा जाता है?

(ख) लाला लाजपत राय की उच्च शिक्षा कहाँ पर हुई थी?

(ग) लाला लाजपत राय किस स्थान पर हुए कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए थे?

(घ) लाला जी ने किस स्थान पर अनेक वर्षों तक म्युनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लाला लाजपत राय का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

....

(ख) लाला जी के व्यक्तित्व पर किसका प्रभाव पड़ा?

....

(ग) प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत लौटकर लाला जी ने कौन-कौन से कार्य किए?

....

(घ) लाला लाजपत राय का निधन कब और कैसे हुआ?

....

(ङ) साइमन कमीशन का भारत आगमन कब हुआ और इसका विरोध क्यों किया गया?

....

3. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) दयानंद एंग्लो विश्वविद्यालय की स्थापना लाहौर में की गई थी। ☐

(ख) लाला लाजपत राय 1920 में कांग्रेस की ओर से जापान गए। ☐

(ग) 'डैपुटेशन' का अर्थ 'प्रार्थना मंडल' होता है। ☐

(घ) लाला जी को गिरफ्तार कर मांडले जेल भेजा गया था। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेज़ी हुकूमत के कफन में अंतिम कील साबित होगी।' इस कथन में छिपे मूलभाव को सोचकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

5. दिए गए शब्दों का प्रयोग कर वाक्य निर्माण कीजिए।

(क) गतिविधि – ....

(ख) भविष्यवाणी – ....

(ग) प्रभाव – ....

(घ) वरिष्ठ – ....

(ङ) दमनकारी – ....

6. नीचे दिए गए शब्दों को समास के विभिन्न भेदों के अनुसार वर्गीकृत करें।

(क) यथाशक्ति – अव्ययीभाव समास (ख) पंचवटी – ....

(ग) माता-पिता – .... (घ) पीतांबर – ....

(ङ) राजादेश – .... (च) दशानन – ....

7. नीचे दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(क) पंकज – ....

(ख) अश्व – ....

(ग) नीर – ....

(घ) नृप – ....

8. नीचे लिखे वाक्यों में से उपसर्ग और प्रत्यय शब्दों को छाँटकर लिखिए।

	उपसर्ग	प्रत्यय
(क) विकास की लिखावट अच्छी है।	....	....
(ख) यह तुम्हारे कर्मों का प्रतिफल है।	....	....
(ग) कालिदास संस्कृत के ज्ञाता थे।	....	....
(घ) बहन ने भाई की कलाई पर राखी बाँधी।	....	....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

9. एक क्रांतिकारी देशभक्त के रूप में लाला लाजपत राय के किन गुणों ने आपको अत्यधिक प्रभावित किया और क्यों? अपने शब्दों के माध्यम से विचारों को प्रकट कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

10. नीचे दिए गए शब्द समूहों को व्यवस्थित क्रम में लगाकर उचित व्यक्ति के साथ उनकी कही गई उक्तियों को संबंधित कीजिए।

या	गाँधी	हराम	सिंह	हिंद	है	पंडित
जिंदाबाद	मरो	भगत	जय	लाल	सुभाष	महात्मा
आराम	करो	इंकलाब	चंद्र	जवाहर	बोस	

–
–
–
–
–

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

11. आप भारत के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में से किसके जीवन मूल्य और आदर्शों को अपनाना चाहेंगे? विस्तारपूर्वक समझाइए।

अध्याय 10

पंच का न्याय
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

कहानी का मूल तत्व

अत्यधिक भरोसा सदैव दुखदायी होता है।

एक बार की बात है। धानपुरा नामक गाँव में दो मित्र रहा करते थे- धीमन काका और जुम्मन चाचा। दोनों में अटूट विश्वास था। जुम्मन जब कहीं बाहर जाते तो धीमन के हवाले अपने घर की सारी जिम्मेदारी सौंप कर निकल पड़ते।

जुम्मन अपनी बूढ़ी मौसी के साथ रहता था। जिसका जुम्मन के सिवा कोई नहीं था। मौसी के पास कुछ खेत और एक घर था। जुम्मन ने अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में मौसी को फँसा कर सब कुछ अपने नाम करवा लिया और देखते ही देखते जुम्मन का व्यवहार बदलने लगा। जुम्मन की पत्नी गुस्से वाली स्त्री थी। वह अपनी जली-कटी बातों से मौसी को सताने लगी। वह कहती, "ये बुढ़िया न जाने कब मरेगी? थोड़ी-सी ज़मीन क्या दे दी, मानों हमें खरीद ही लिया। जितना रुपया इसकी रोटी, दवाई में लग गया है, इतने में तो पूरा गाँव खरीद लेते।" मौसी रोज़ कड़वे घूँट पीकर चुप रह जाती।

कुछ दिन गुजरने के बाद मौसी ने जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन के कान पर जूँ तक न रेंगी।

कुछ दिन तक यों ही रो-धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन मजबूर होकर मौसी ने कहा, "बेटा, हम सब एक साथ रहें ये अब मुमकिन नहीं है। तुम मुझे कुछ रुपये दे दिया करो, मैं अपना पेट स्वयं भर लिया करूँगी।"

मौसी की इस विनय पर भी जुम्मन के सिर पर जूँ नहीं रेंगी। उसने मौसी की और निंदा करनी शुरू कर दी। मौसी ने सोचा अब पानी सिर से गुजर चुका है अब और अधिक देर करना ठीक नहीं। अतः मौसी विवश होकर पंचायत के पास जाने के लिए निकल गई।

शाम के समय पंचायत बैठी। बूढ़ी मौसी ने विनती करते हुए पंचों से कहा, "पंचों तीन साल पहले मैंने अपनी संपति अपने भांजे जुम्मन के नाम इस उद्देश्य से लिख दी थी कि ये मुझे दो वक्त की रोटी और कपड़ा देगा।" तीन साल बीत गए मुझे इसके ताने सहते हुए, अब मुझे न अन्न देता है न कपड़ा। अब आप ही मेरा इंसाफ कीजिए। आप जो फैसला करेंगे मुझे मंजूर होगा। पंचों ने मौसी को कहा कि हम पाँचों में से किसी एक का चुनाव कर लीजिए। वही आपके लिए हितकर होगा।

पंचों के कहने पर मौसी ने धीमन काका को न्याय पाने के लिए सरपंच चुना। अपने मित्र धीमन काका का नाम सुनते ही जुम्मन की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा यहाँ तो साँप भी मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।

सरपंच बनने के बाद धीमन काका ने दोनो पक्षों की बातें ध्यान से सुनी। अंत में उसने अपना न्याय सुनाते हुए कहा, "मौसी ने जो कुछ कहा वह सच है। इसलिए जुम्मन को हर महीने मौसी को पैसे देने होंगे।" धीमन का यह न्याय सुनते ही जुम्मन आग-बबूला हो गया। उसे धीमन से ऐसी उम्मीद कदापि नहीं थी। उस दिन से धीमन, जुम्मन को फूटी आँख न भाता और मन ही मन बदला लेने की ताक में रहने लगा। धीमन के पास दो बैल थे। कुछ महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल बीमार हो गया। अब एक बैल किस काम का? धीमन ने सोचा

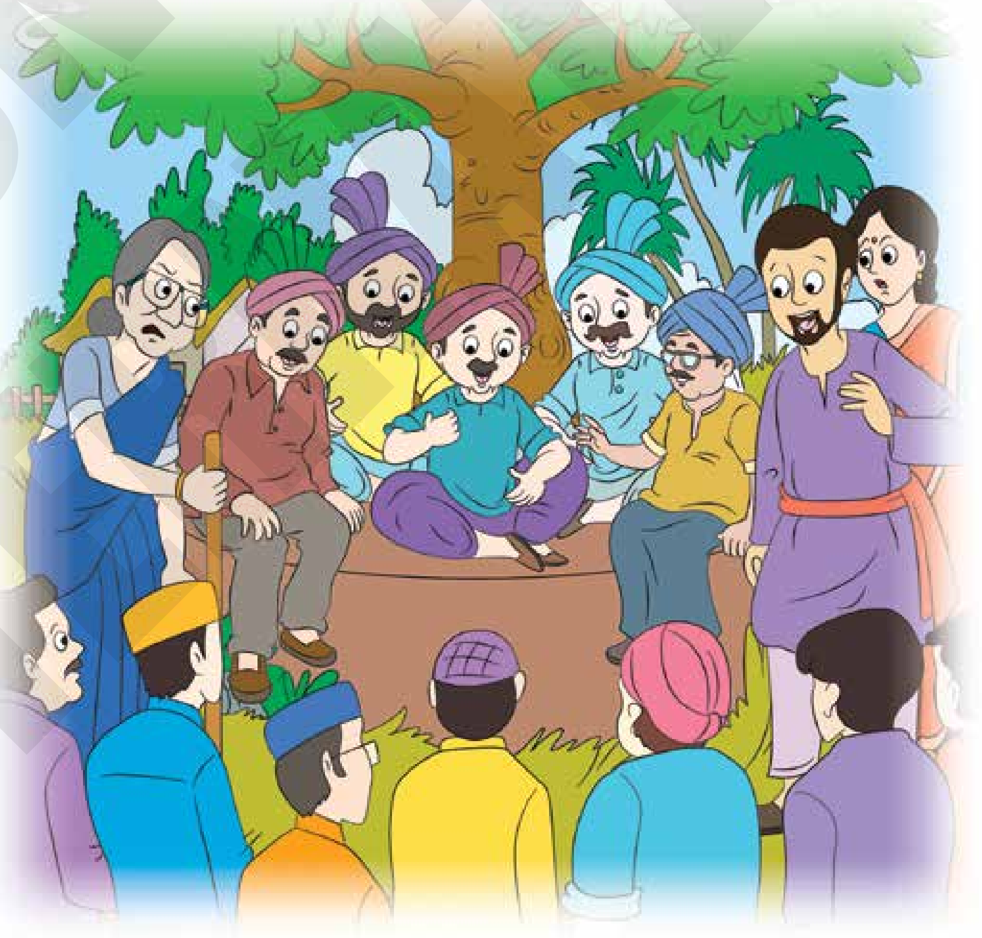

क्यों न गाँव के साहूकार को यह बैल बेच दूँ। वह इक्का गाड़ी हाँकते थे। धीमन काका के बैल को देखकर साहूकार का मन ललचाया। तोल–मोल के बाद धीमन ने वह बैल साहूकार को इस शर्त पर बेच दिया कि महीने के अंदर ही वह बैल का दाम चुका देगा। साहूकार बैल से खूब काम लेता मगर उसके भोजन का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता। इसलिए बैल का शरीर टूटता गया और वह एक महीने के भीतर ही मर गया। महीना बीतने पर धीमन अपने बैल की रकम लेने पहुँचा तो साहूकार पैसे देने में आनाकानी करने लगा। धीमन अपने पैसे माँगता–माँगता थक गया पर साहूकार ने उसे अंगूठा दिखा दिया। आखिरकार धीमन ने पंचायत बुलाई।

गाँव की पंचायत फिर बैठी। पंच ने पूछा, "बोलो धीमन, किसको अपना सरपंच चुनते हो? धीमन ने कहा, "साहूकार ही चुन लें।" साहूकार अकड़कर खड़ा हुआ और बोला, "मेरी ओर से जुम्मन चाचा।" जुम्मन का नाम सुनते ही धीमन का कलेजा मुँह को आ गया।

उधर सरपंच बनते ही जुम्मन के मन में अपनी ज़िम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उसने सोचा कि मैं इस समय न्याय के सबसे ऊँचे आसन पर बैठा हूँ। इसलिए मुझे सत्य से नहीं हटना चाहिए।

पंचों ने दोनों से सवाल करने शुरू किए। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया, "पंचों ने दोनों पक्षों की बात पर अच्छी तरह से विचार किया। साहूकार के लिए यही उचित होगा कि वह बैल का दाम चुका दे। उसने जब बैल खरीदा था तब बैल को कोई बीमारी नहीं थी। बैल की मौत अधिक परिश्रम करने से हुई है। फैसला सुनकर धीमन फूले न समाए। वे उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोले, "पंच परमेश्वर की जय।"

शब्दार्थ

व्यवहार	= आचरण	संपति	= जायदाद
जली–कटी बातें	= बुरा भला कहना	आनाकानी	= मना करना
अटूट	= पक्का	परिश्रम	= मेहनत
विनय	= प्रार्थना		

उच्चारण करें

ज़िम्मेदारी बिल्कुल ललचाया मजबूर विश्वास ज़मीन

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका पाठ में निहितार्थ मूलभाव के साथ बच्चों को पढ़ाएँ तथा कहानी से मिलने वाली प्रेरणा को ग्रहण करने हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए
Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) धीमन काका और जुम्मन चाचा किस गाँव में रहते थे?

(ख) धीमन काका के पास कितने बैल थे?

(ग) जुम्मन चाचा ने किसी संपति हथिया ली थी?

(घ) जुम्मन चाचा की पत्नी कैसी थी?

ज़रा लिखिए
Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मौसी को पंचायत क्यों बुलानी पड़ी?

....

(ख) जुम्मन चाचा धीमन काका पर आगू बबूला क्यों हो गए?

....

(ग) धीमन काका ने अपना बैल किसको बेचा?

....

(घ) साहूकार ने अपने पक्ष में पंच के रूप में किसको चुना और क्यों?

....

(ङ) पंच बनते ही जुम्मन चाचा के मन में किस भाव की उत्पति हुई?

....

3. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) धीमन और जुम्मन किस गाँव के वासी थे।

☐ धानपुर ☐ दौलतपुर ☐ सोहनपुर ☐ रामपुर

(ख) साहूकार ने अपने पक्ष में किसको सरपंच चुना?

☐ मौसी को ☐ धीमन को ☐ जुम्मन को ☐ राघव को

(ग) धीमन ने साहूकार को कितने बैल बेचे?

☐ दो ☐ एक ☐ तीन ☐ चार

(घ) जुम्मन का बूढ़ी औरत से क्या रिश्ता था?

☐ चाची का ☐ माँ का ☐ काकी का ☐ मौसी का

4. उचित मिलान कीजिए।

(क) जली-कटी मित्र

(ख) बीमार मौसी

(ग) बूढ़ी बातें

(घ) अटूट बैल

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. यदि आपको अपने क्लास का मॉनिटर बना दिए जाए, तो बिना भेदभाव किए आप किन पहलुओं पर सबकी सहायता करेंगे? सोचकर लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. दिए गए वर्णों को पहचान रिक्त वर्ण भरिए।

(क) …… + का + य + त (ख) वि + …… + वा + स

(ग) हि + …… + क + र (घ) स + र + …… + ……

7. दिए गए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए।

(क) खेत – …………………… (ख) मित्र – ……………………

(ग) गाँव – …………………… (घ) आँख – ……………………

(ङ) बैल – …………………… (च) पंच – ……………………

8. दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) अन्न – …… ……………………

अन्य – …… ……………………

(ख) दिन – …… ……………………

दीन – …… ……………………

(ग) कर्म – …… ……………………

क्रम – …… ……………………

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

9. नीचे दिए गए मुहावरों का प्रयोग करते हुए संवाद-लेखन कीजिए।

आँखें बिछाना   ईद का चाँद होना   मुँह में पानी भर आना   आनाकानी करना

आप – ....

मित्र – ....

आप – ....

मित्र – ....

आप – ....

10. जुम्मन चाचा के न्याय से आप किस हद तक प्रभावित हुए और क्यों?

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. दिए गए शब्दों को ध्यानपूर्वक देखिए और बताइए कि न्याय में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करने हेतु हमें किन गुणों को आत्मसात करना होगा? कोई तीन शब्द बूझकर लिखिए।

सत्यवादी   तानाशाह   धैर्यवान   हिंसावादी   मृदुभाषी

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

12. दोस्ती में किसी भी हीन-भावना को स्थान नहीं देना चाहिए। आप अपने अंदर से किस प्रकार की हीन-भावना का त्याग करना चाहेंगे? सोचकर लिखिए।

....

....

....

....

अध्याय 11

मेरी पहली हिमाचल यात्रा
(यात्रा वृतांत)

अध्ययन से पूर्व

- कक्षा में हिमाचल से जुड़े कुछ चित्र दिखाए और पूछें ये चित्र कहाँ के हो सकते हैं?

यात्रा वृतांत का मूल तत्व

हिमाचल की भौगोलिक एवं दार्शनिक स्थिति से अवगत कराना ताकि बच्चों को हिमाचल प्रदेश के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकें।

चंडीगढ़ में मेरा बचपन बीता है। जब भी हम हवा में थोड़ी-सी शीत लहर महसूस करते तो दौड़ते हुए सभी भाई-बहन छत पर जाते थे यह देखने के लिए कि शिमला में बर्फ गिरी है या नहीं ताकि हम अपने आप को ऊनी कपड़ों में फिलहाल छिपाएँ या थोड़ा समय रूककर। शिमला हमारे लिए बेहद नजदीक के बर्फीले क्षेत्र में से एक रहा। मगर मुझे तो वहाँ जाने की तमन्ना होती जहाँ से ये सारी बर्फ, सारी घाटियाँ एक विशाल क्षेत्र में समा जाती है और वह जगह थी भारत में पर्वतों का राज्य कहे जाने वाला प्रदेश- 'हिमाचल'। मुझे हिमाचल देखने का मौका अपने स्कूल की तरफ से स्कॉउट कैम्प के दौरान मिला। हम स्कूल की बस से सभी टीचर व विद्यार्थी हिमाचल की यात्रा करने के लिए चल पड़े। रात का सफ़र तो सो कर कट गया, लेकिन सुबह बस की खिड़की से आती ठंडी फुहारों और हवाओं ने मानो हमें छूकर अपना परिचय दे दिया हो। बस की रफ़्तार और पहाड़ों का सीना चीरती टेढ़ी-मेढ़ी सड़कें देखकर कलेजा मुँह को आ रहा था। प्रकृति की प्रचुरता हिमाचल के पहाड़ों, नदियों, सड़कों, बादलों को देखते ही बन रही थी। आखिरकार हमारी बस हिमाचल के छोटे से ढाबे पर रुकी। वहाँ की चाय की दुकानें हो या सार्वजनिक जगह, हर तरफ अजीब-सा सुकून और शान्ति को महसूस किया जा रहा था। सच में हिमाचल प्रदेश को यूँ ही भारत का सुखद राज्य नहीं कहा जाता, क्योंकि जितनी अद्भुत यहाँ की प्राकृतिक छटा है उतने ही मिलनसार, भोले और हमदर्द हैं यहाँ के लोग।

हिमाचल यात्रा के दौरान यहाँ पर प्लास्टिक का बहुत ही कम प्रयोग किया जाता है। वहाँ के लोग कपड़े के थैले का इस्तेमाल करते हैं ताकि यदि उसे फेंकने की नौबत भी आए तो वह आसानी से मिट्टी में घुल जाए, बिना प्रकृति को कोई हानि पहुँचाए। हिमाचल के एक छोटे से गाँव में हमने देखा कि वहाँ के युवा संघों ने प्लास्टिक मुक्त गाँव रखने का दायित्व ले रखा है। यदि उन्हें कोई कचरा दिख भी जाए तो वे स्वयं उसे उठाकर कचरे के डिब्बे में डाल देते हैं। उनकी ये पहल देखकर मन में आया कि जब यहाँ के लोग ये सराहनीय प्रयास कर सकते हैं, तो बाकी भारत के क्यों नहीं?

यहाँ के आश्रय गृह और छोटे-छोटे अतिथि गृहों का बंदोबस्त भी लाज़वाब दिखा। वहाँ के अधिकतर होटल राज्य विद्युत मंडल द्वारा उपलब्ध विद्युत पर चल रहे थे। पानी गरम करने का काम सौर

तापक और सौर कंदीलों की मदद से होता दिखा। हिमाचल के सबसे छोटे गाँव जिसकी जनसंख्या लगभग 100 दिखी, उस गाँव में भी एक प्राथमिक विद्यालय था। हिमाचल के ताबो और धनकर जैसे दूरस्थ गाँवों में भी हेलीपैड देखने को मिला।

राजमा–चावल हिमाचल का प्रधान आहार है, जो यहाँ हर जगह मिलता है। यहाँ पर कौए और गोरैया जैसे पक्षियों की संख्या अधिक है या यूँ कहें कि यही दो प्रजातियाँ वहाँ अधिक देखने को मिलती हैं। यहाँ के सभी मंदिरों और मठों में हिंदू और बौद्ध धर्म का अनोखा मिलन देखने को मिला जिसमें प्रत्येक व्यक्ति एक ही श्रद्धाभाव के प्रतीक स्वरूप दिखे। यहाँ के प्राचीन पहाड़ी मंदिरों में वास्तुकला देखने को मिली जिनकी कुछ मूर्तियाँ सामान्य थी और कुछ अन्य शैलियों से

संबंधित थी। यहाँ का क्षेत्र जितना नदियों, पहाड़ों से घिरा हुआ है उतना ही प्राचीन मंदिरों और मठों से भी। देखते ही देखते सांझ होने को आई थी और हम सभी अपने गंतव्य की ओर बढ़ते जा रहे थे। वापस अतिथि गृह लौटकर रात्रि भोज करना और ठंडी हवाओं के आगोश में सिमटकर सो जाना मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया।

शब्दार्थ

अतिथि	=	मेहमान	दायित्व	=	ज़िम्मेदारी
अविस्मरणीय	=	यादगार	सराहनीय	=	प्रशंसा के लायक
तमन्ना	=	इच्छा	जनसंख्या	=	आबादी
फुहार	=	ओस	दूरस्थ	=	दूर के
अद्भुत	=	अनोखा	प्राचीन	=	पुराना

उच्चारण करें

बर्फीले सार्वजनिक हमदर्द प्रकृति बंदोबस्त

उपलब्ध प्रजातियाँ वास्तुकला संबंधित

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को हिमाचल प्रदेश की बोली, पहनावा एवं संस्कृति से परिचित करवाएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) यात्रा वृतांत में किस जगह की बात की गई है?

(ख) मिहाचल की यात्रा पर कौन-कौन गया था?

(ग) लेखिका का बचपन किस शहर में बीता था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) पर्वतों का राज्य किसे कहा जाता है और क्यों?

....

(ख) हिमाचल में प्रकृति की प्रचुरता का क्या रहस्य है?

....

(ग) हिमालय वासियों ने किस चीज़ का दायित्व उठा रखा है?

....

(घ) हिमाचल में कौन सी दो प्रजातियाँ देखने में अधिक मिली?

....

(ङ) हिमाचल के मंदिरों की क्या विशेषताएँ हैं?

....

3. उचित शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाते हुए वाक्यों के रिक्त स्थान भरिए।

(क) हिमाचल में .... का प्रयोग बहुत कम होता है।

☐ कचरा ☐ प्लास्टिक ☐ पानी ☐ चाय

(ख) .... यहाँ का प्रधान आहार है।

☐ लिट्टी चोखा ☐ राजमा-चावल ☐ कढ़ी-चावल ☐ छोले-चावल

(ग) हिमाचल .... है।

☐ पर्वतों का राज्य ☐ नदियों में कम ☐ समुद्री क्षेत्र ☐ मैदानी क्षेत्र

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. हिमाचल प्रदेश कम दाब वाला क्षेत्र है या अधिक दाब वाला? सोचकर बताइए।
5. हिमाचल प्रदेश की जलवायु के प्रभावित होने के पीछे क्या रहस्य है? कक्षा में चर्चा करते हुए लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

6. हिमाचल प्रदेश अपनी किन विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

7. दिए गए वाक्यांश से संबंधित समास का नाम बताइए।

(क) पर्वतों का राज्य – ....

(ख) रात्रि का भोज – ....

(ग) तिथि के अनुसार जो न आए अर्थात् अतिथि – ....

(घ) मिलनसार – ....

8. दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए।

(क) प्रकृति – .... (ख) अनोखा – ....

(ग) बर्फ – .... (घ) ठंड – ....

(ङ) सौंदर्य – .... (च) विलोम – ....

EDITIONE INTERNATIONAL

9. **दिए गए शब्दों की कारक विभक्ति बताइए।**

(क) हम हिमाचल की यात्रा पर गए – ....

(ख) हिमाचल में पानी गर्म करने का प्रमुख साधन सौर तापक है – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. **प्लास्टिक थैलों का प्रयोग किस तरह के प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है? कक्षा में संवाद करते हुए पाँच वाक्य लिखिए।**

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. **सौर ताप ऊर्जा का उपयोग हम कहाँ-कहाँ कर सकते हैं? नाम लिखिए।**

....

12. **सौर ताप ऊर्जा का प्रमुख संसाधन क्या है? नाम लिखिए।**

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. **'पर्वतों का राज्य' की उपाधि हिमाचल को अन्य राज्यों से एक अलग विशेषता प्रदान करती है। क्या आप की भी कोई ऐसी विशेषता है, जो आपको अन्य लोगों से विशेष बनाती हो? सोचकर लिखिए।**

....

....

....

....

अध्याय 12

"कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती"

(कविता)

अध्ययन से पूर्व

✣ उपरोक्त चित्र में दर्शाई गई गतिविधि को बताइए।

कविता का मूल तत्व

प्रस्तुत कविता में बताया गया है कि इंसान को असफलताओं से नहीं डरना चाहिए बल्कि उनका डटकर सामना करना चाहिए। देर-सवेर सफलता मिलती ही है।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है,
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है,
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में,
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

– सोहन लाल 'द्विवेदी'

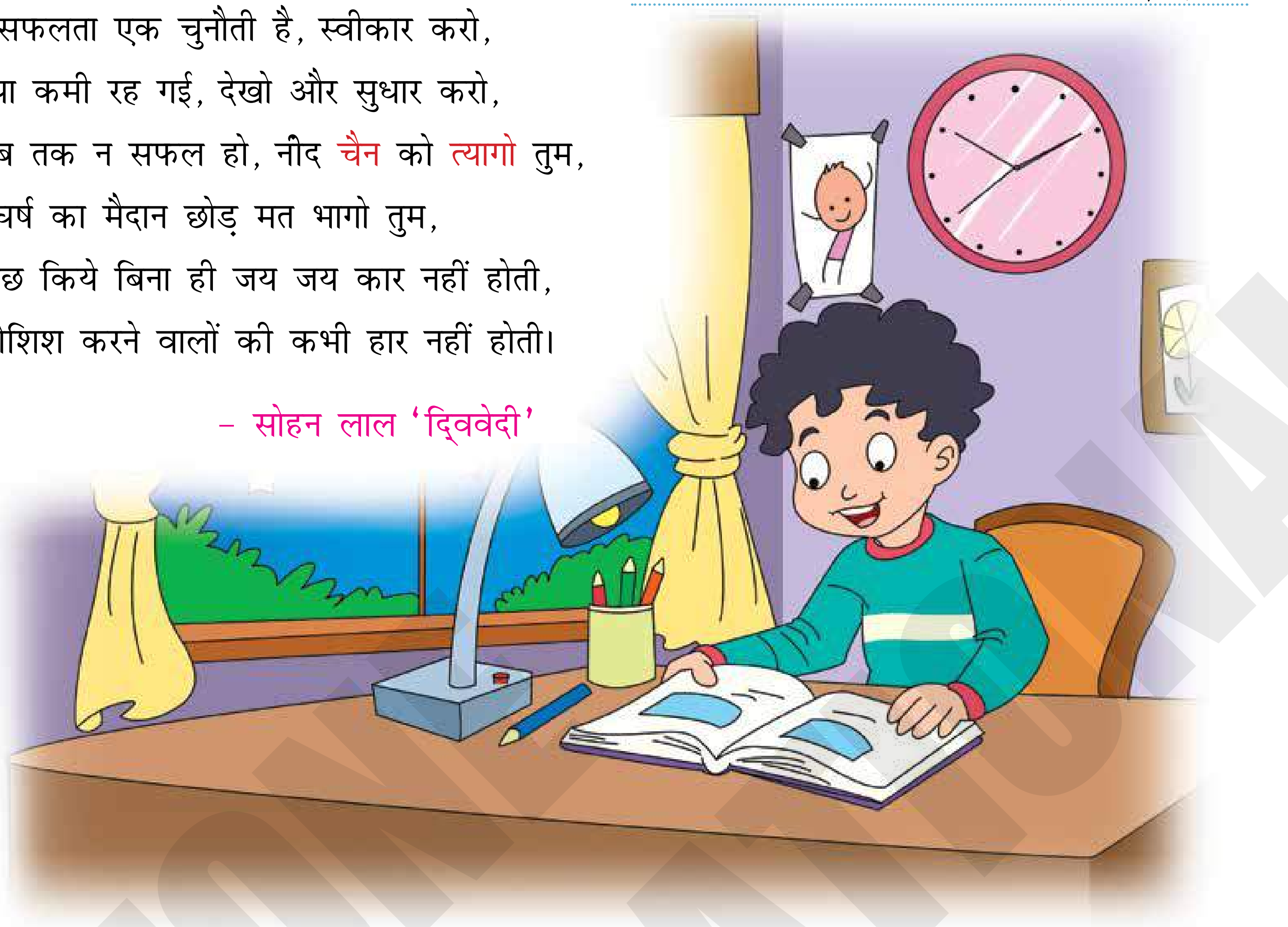

शब्दार्थ

लहरों	=	तरंग, हिलोर, पानी का बहाव	उत्साह	=	जोश, उमंग, आवेग
कोशिश	=	प्रयास, परिश्रम, जोर, चेष्टा	चैन	=	सुख, अमन, शांति
गोताखोर	=	पानी में डुबकी लगाने वाला	त्याग	=	सन्यास, अस्वीकार

उच्चारण करें

नौका नन्हीं डुबकियाँ सिंधु चुनौती संघर्ष

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता का भावार्थ समझाएँ तथा उन्हें कठिनाई एवं असफलताओं से लड़ने के लिए प्रेरित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लहरों से कौन डरता है?

(ख) सिंधु में डुबकियाँ लगाने के लिए कवि ने किसे कहा है?

(ग) असफलता को क्यों स्वीकार करना चाहिए?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) नन्हीं चींटी किस प्रयास में लगी है?

....

(ख) मैदान छोड़कर भागने के लिए कवि ने क्यों मना किया है?

....

(ग) कविता में प्रयोग किए गए 'लहरों' शब्द से क्या तात्पर्य है?

....

(घ) कवि ने नींद तथा चैन को कब तक त्यागने के लिए कहा है?

....

2. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) .... से डरकर नौका पार नहीं होती।

(ख) डुबकियाँ सिंधु में .... लगाता।

(ग) .... का मैदान छोड़ मत भागो तुम।

(घ) मन का विश्वास .... में साहस भरता।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. "असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।" इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. **दिए गए वाक्यों में समास की पहचान करके रेखांकित कीजिए।**
   (क) तुम कल यथासमय बैठक में उपस्थित हो जाना।
   (ख) रावण को दशानन कहा जाता है।
   (ग) आज घर में घनश्याम आया है।

7. **दिए गए वाक्यों में क्रिया की पहचान कीजिए।**
   (क) पिताजी आज मुंबई से लौट आए हैं।
   (ख) माँ सुरेश से पत्र लिखवाती है।
   (ग) सुलेखा ने घर पहुँचकर भोजन किया।

8. **दिए गए शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए।**
   (क) डर – .... (ख) बाहर – ....
   (ग) मोटा – .... (घ) भरा – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. **'असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है।' इस पंक्ति के अर्थ को स्पष्ट करते हुए संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए।**

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. **दिए गए शब्दों को पहचानिए तथा उनको पूरा कीजिए।**
   (क) डु .... याँ (ख) .... श्वा ....
   (ग) अ .... र .... (घ) .... टक ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. **'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' प्रस्तुत पंक्ति को अनुसारित करते हुए आप अपने जीवन में किस प्रकार आत्मसात करना चाहेंगे?**

अध्याय 13

बुद्धि का सौदागर
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

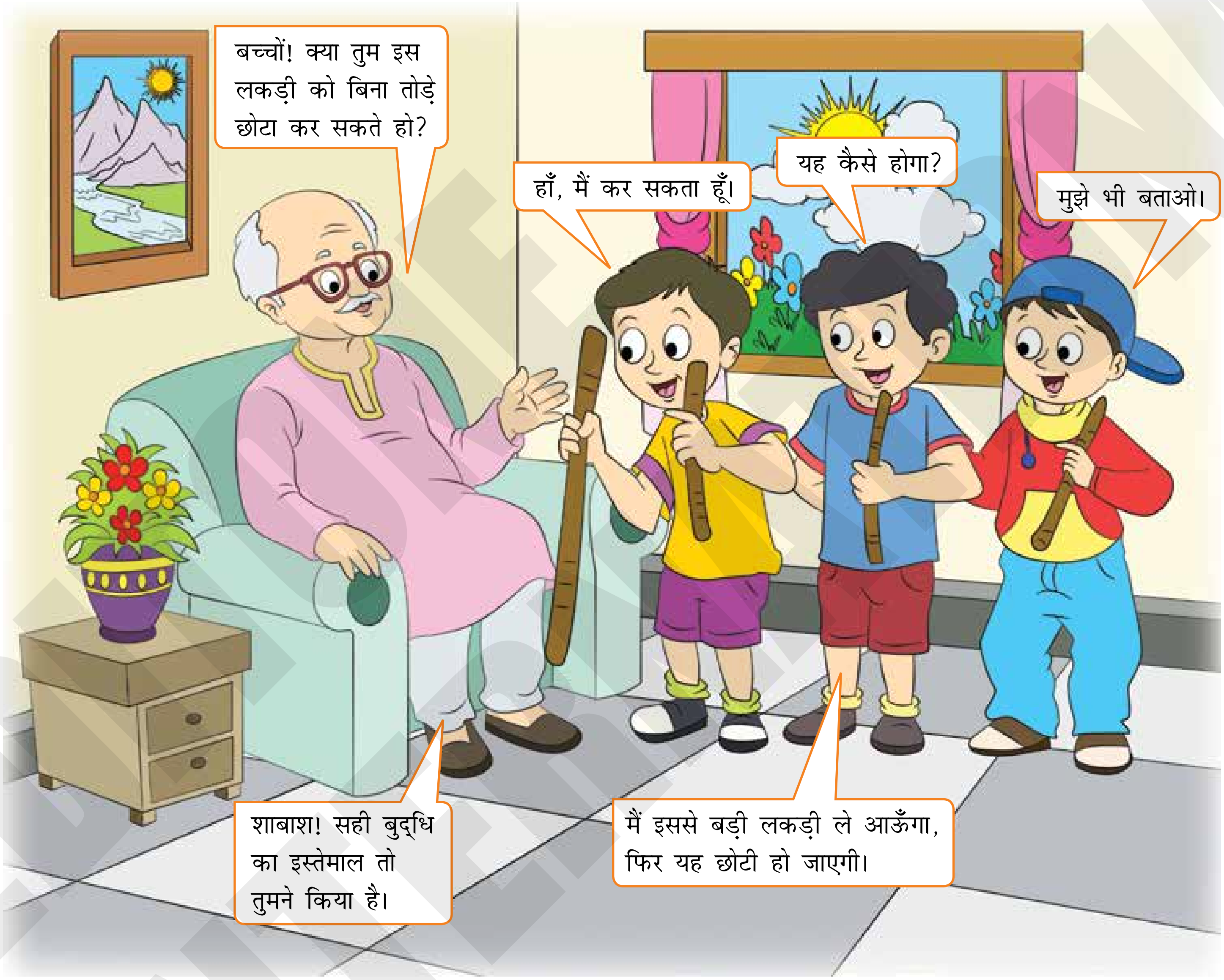

कहानी का मूल तत्व

प्रस्तुत अध्याय में बुद्धि को उचित तरीके से इस्तेमाल करने के बारे में बताया गया है।

गुजरात के छोटे-से गाँव में एक निर्धन लड़का रहता था। उसके पास आजीविका का कोई साधन नहीं था। गाँव की गरीबी से तंग आकर उसने शहर जाने की ठान ली। शहर जाकर उसने एक सस्ती-सी दुकान किराए पर ली। जिस पर लिखा था -

बुद्धि का सौदागर : यहाँ बुद्धि बिकती है।

लड़के की दुकान के आस-पास कई तरह की दुकानें थी। सभी दुकानदार लड़के की खिल्ली उड़ाते थे। उनकी परवाह किए बिना वह दिनभर आते-जाते ग्राहकों को आवाज़ लगाता, "आओ, आओ! बुद्धि ले जाओ। एकदम खरी, सस्ती और उपयोगी। बुद्धि के सौदागर की दुकान पर एक भी ग्राहक नहीं आया। वह दुकान बंद करने की सोच ही रहा था कि एक धनी सेठ का मूर्ख लड़का उधर से निकला। उसने सोचा पिताजी मुझे निर्बुद्धि कहते हैं, क्यों न मैं बुद्धि खरीद लूँ - और बोला, "एक सेर बुद्धि का कितना पैसा लोगे?"

"मैं बुद्धि तोलकर नहीं, उसकी किस्म के हिसाब से बेचता हूँ। मेरे पास तरह-तरह की बुद्धि है। आपको कैसी बुद्धि चाहिए।"

"तो ठीक है। एक पैसे में जिस तरह की बुद्धि आए, दे दो।"

सौदागर ने एक परची निकालकर उसको दे दी। उस परची पर लिखा था-

जब दो व्यक्ति आपस में झगड़ रहें हों तो खड़े होकर उन्हें देखना मूर्खता है।

सेठ का पुत्र खुशी-खुशी घर पहुँचा अपने पिता को कागज़ की परची देते हुए बोला," देखिए पिता जी, मैं एक पैसे में अक्ल खरीदकर लाया हूँ।" सेठ ने परची पढ़ी और बोले, "मूर्ख, एक पैसे में यह क्या लाया है? यह बात तो सभी जानते हैं। तुमने मेरा एक पैसा डुबो दिया।" फिर सेठ बाज़ार गया, उस लड़के को बुरा-भला कहते हुए बोला, "लोगों को ठगते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती? मेरा एक पैसा वापस करो।"

पहले मेरी सीख वापस करो। मैं तब पैसा वापस करूँगा। लड़के ने कहा।

'कैसी सीख'? सेठ ने कहा।

अगर पैसा वापस चाहिए तो आपको एक कागज़ पर लिखकर देना होगा कि आपका बेटा कभी भी मेरी सीख का प्रयोग नहीं करेगा।" सेठ ने कागज़ पर हस्ताक्षर किए और अपना पैसा वापस लेकर चला गया।

एक दिन उस नगर के राजा की दोनों रानियों की दासियों में झगड़ा हो गया। वहीं सेठ का लड़का भी खड़ा था। फिर क्या था, दोनों दासियों ने उसे अपना गवाह बना लिया। झगड़े की बात रानियों तक पहुँची। दोनों रानियों ने लड़के से अपनी-अपनी दासी के पक्ष में गवाही देने के लिए कहा। सेठ और उसके बेटे के होश उड़ गए। वे सहायता के लिए बुद्धि के सौदागर के पास पहुँचे। बोले, "हमें किसी तरह बचा लो।"

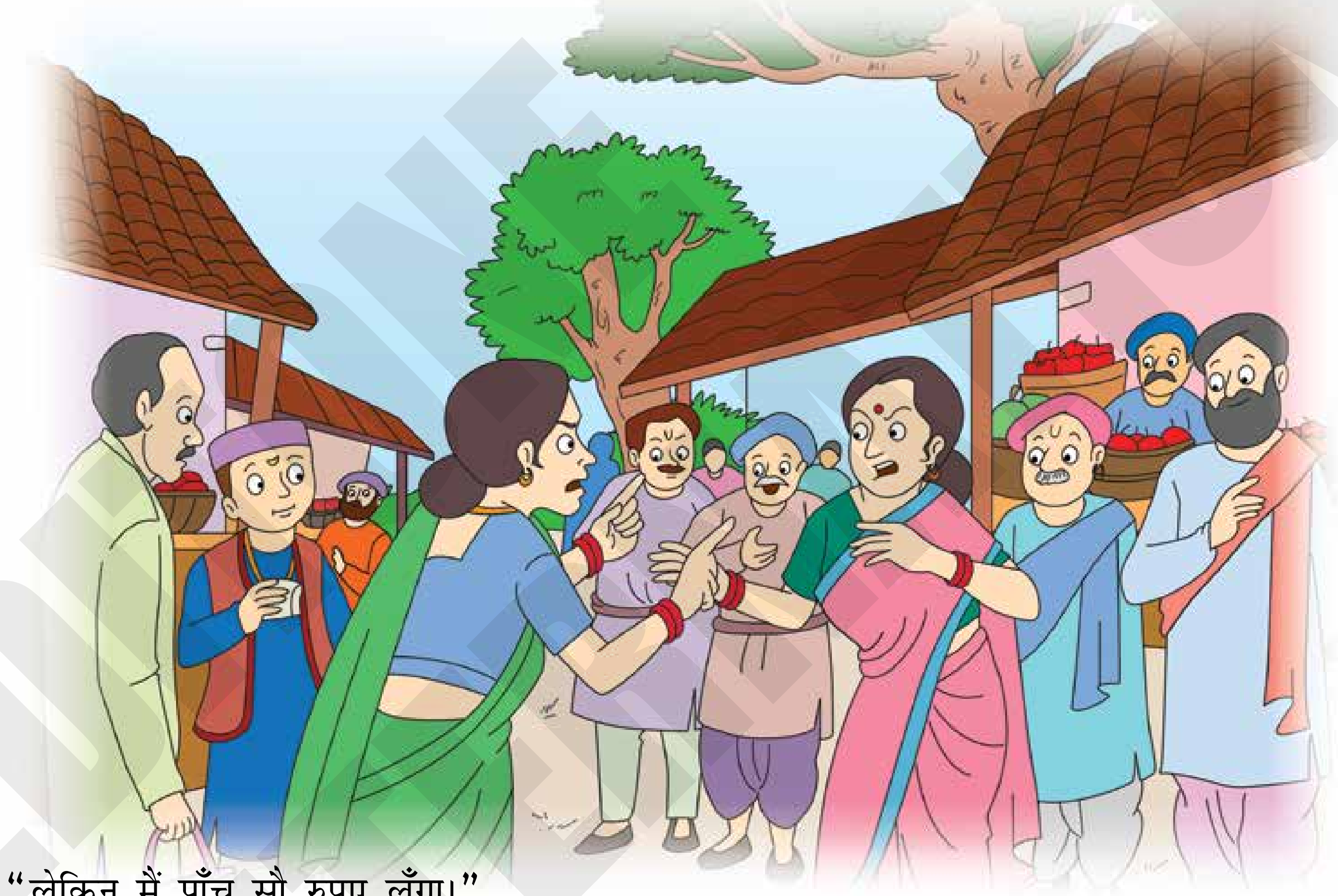

"लेकिन मैं पाँच सौ रुपए लूँगा।"

"ठीक है। ये लो पाँच सौ रुपए।"

"देखो, जब गवाही देने के लिए बुलाया जाए तो पागल की तरह व्यवहार करना", बुद्धि के सौदागर ने उपाय बताया। सेठ के बेटे ने वही किया। राजा ने उसे पागल समझकर महल से बाहर निकाल दिया।

कुछ दिन के पश्चात् बुद्धि के सौदागर की बातें राजा के कानों में भी पड़ी। राजा ने उसे बुलवाया और पूछा, "सुना है, तुम बुद्धि बेचते हो! क्या तुम्हारे पास बेचने के लिए और बुद्धि है?"

"जी हुजूर! आपके काम की तो बहुत है लेकिन एक लाख रुपए.....

"तुम्हें एक लाख रुपये ही दिए जाएँगे।"

सौदागर ने एक परची राजा को दे दी। परची पर कुछ लिखा था। राजा ने पढ़ा-

किसी भी कार्य को करने से पहले विचार कर लेना चाहिए।

राजा को यह बात बहुत पसंद आई। उसने महल के सभी जगह यह वाक्य लिखवा दी। जिससे वह इस बहुमूल्य बात को कभी न भूले और न ही कोई और भूल सके।

एक बार राजा के एक मंत्री ने वैद्य के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा और राजा की दवा में विष मिला दिया। राजा ने जैसे ही दवा को पीने की कोशिश की वैसे ही उसकी नजर पड़ी- *कुछ भी करने से पहले खूब सोच लेना चाहिए।* राजा ने प्याला नीचे रखा और दवा को देखकर सोच में डूब गया कि पीऊँ या नहीं। वैद्य और मंत्री को लगा कि उनका भांडा फूट गया है। वे दोनों राजा से क्षमा माँगने लगे। "महाराज, हमें क्षमा कर दीजिए, हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई।"

राजा ने सिपाहियों को बुलवाकर दोनों को कारागार में डलवा दिया। बुद्धि के सौदागर को उन्होंने अपना मंत्री बनाया और इनाम में खूब सारा धन दिया।

शब्दार्थ

सौदागर = व्यापारी, बेचने वाला
षड्यंत्र = साज़िश
निर्बुद्धि = मूर्ख, बिना बुद्धि का
वैद्य = हकीम, डॉक्टर

उच्चारण करें

व्यक्ति निर्बुद्धि मूर्खता हुजूर वैद्य

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को उचित जगह तथा उचित समय पर विवेक के साथ बुद्धि का इस्तेमाल करने की शिक्षा दें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लड़का किससे तंग आ गया था?

(ख) लड़के ने अपनी दुकान का क्या नाम रखा?

(ग) निर्धन लड़के ने सेठ के लड़के को क्या बेचा?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) निर्धन लड़का शहर की ओर क्यों चल पड़ा?

....

(ख) बुद्धि खरीदते वक्त सेठ के बेटे ने क्या सोचा?

....

(ग) लड़के ने राजा को क्या सीख दी?

....

(ग) लड़के की सीख से राजा को क्या फायदा हुआ?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

धन कमाने   माता-पिता   पागल   दासियाँ

(क) बुद्धिमान लड़के के .... नहीं थे।

(ख) लड़के के दिमाग में एक दिन .... का विचार आया।

(ग) राजा की दोनों रानियों की .... बाजार गईं।

(घ) राजा ने सेठ के लड़के को .... समझकर बाहर निकाल दिया।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. 'आत्मज्ञान' के बिना मानव किस प्रकार स्वयं को प्रदर्शित करता है? सोच-समझकर लिखिए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

5. दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्द की पहचान करें और भेद सहित लिखिए।

(क) आजकल भलाई का तो जमाना ही नहीं रहा – ....

(ख) ज्यादा पानी मत बहाओ। – ....

(ग) हिमालय पर्वत कठोर पत्थरों से निर्मित है। – ....

6. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग तथा मूल शब्द छाँटिए।

(क) उत्कर्ष – .... + ...

(ख) सुबोध – .... + ...

(ग) निहत्था – .... + ...

(घ) अभाव – .... + ...

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

7. निर्धन लड़के की दुकान पर सेठ के लड़के के स्थान पर यदि आप होते तो किस प्रकार मोलभाव करते? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

8. दी गई शब्द पहेली में से पाठ में शामिल शब्दों को अलग करके लिखिए।

बु	रा	जा	प	रा	म
द्	ग	न	न	प	से
धि	सौ	दा	ग	र	ठ
गाँ	ध	सी	ज	ची	ल
व	नी	झ	बि	क	ती

....

....

....

....

....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

9. प्रस्तुत कहानी के किस पात्र के गुणों ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया और क्यों? क्या आप उन गुणों को अपने जीवन में व्यवहार्य रूप में लाना चाहेंगे?

अध्याय 14

पश्चाताप
(लेख)

अध्ययन से पूर्व

लेख का मूल तत्व

अपनी गलती को स्वीकारना भी व्यक्तित्व का एक गुण है।

जैसे ही दरवाजे की घंटी बजी मैं तुरंत भागते हुए पहुँची क्योंकि मैं जानती थी कि नासिरा का नौकर कुन्नू ही होगा। उसने मुझे बताया था कि कल चित्रकथा की पुस्तक लेकर दस बजे कुन्नू को भेजेगी। ताकि मै आज आराम से चित्रकथा को आनंद के साथ पढ़ूँगी।

नासिरा मेरी सबसे पक्की और अच्छी सहेली है। उसके पापा की बड़ी फैक्ट्री है। वह बड़े रईस हैं। सभी नई चित्रकथाएँ उसके पापा उसे लाकर देते हैं। मेरा क्या, मेरे पापा तो एक ऑफिस में क्लर्क हैं। चित्रकथा तो क्या काई अच्छा पेन तक लाकर नहीं देते, जबकि कक्षा में सभी बच्चे अच्छे-अच्छे पेन लाते हैं। पर नासिरा मुझे सबसे ज़्यादा प्यार करती हैं। पता है क्यों? कक्षा में मेरे सबसे ज़्यादा अंक आते हैं।

यही सोचते हुए जैसे ही मैनें दरवाज़ा खोला, सचमुच कुन्नू मेरे लिए चार चित्रकथाएँ लाया था। जैसे ही मैं चित्रकथाएँ लेकर वापस मुड़ी कुन्नू वापस चला गया। अचानक दरवाज़े की तरफ मेरी निगाह गई। मैंने देखा, एक पचास का करारा नोट पड़ा था। मैंने चुपचाप नोट को उठाकर चित्रकथा के बीच में रख लिया और अंदर आकर अपनी दूसरी किताबों के बीच छिपा दिया।

मैं चित्रकथा पढ़ने बैठ गई, पर आज चित्रकथा में कुछ आनंद नहीं आ रहा था, क्योंकि मेरा ध्यान नोट में ही लगा हुआ था और मन ही मन इस नोट का हिसाब लगा रही थी।

तभी एक ख़्याल आया कि मैं बाजार से बढ़िया पेन खरीदूँगी। उसके बाद मैं सोडा पानी पीऊँगी। बचे हुए पैसों सें अपने बालों के लिए एक सुंदर क्लिप खरीदूँगी। जैसे कि कक्षा में नासिरा और मोनिका लगाकर आती हैं।

सोचते-सोचते न जाने कब और कैसे मेरी आँख लग गई। घंटे-भर बाद सोकर उठी तो मम्मी ने बताया कि नासिरा का नौकर आया था, चेहरे से बहुत परेशान दिख रहा था। उसे नासिरा के पापा ने लौटते समय बाज़ार से दूध और एक बिस्कुट का पैकेट लाने को कहा था। पर बेचारे कुन्नू से पचास का नोट कहीं गिर गया, जो उन्होंने नासिरा को दिया था।

मैं चुपचाप सुनती रही। मैंने सोचा, उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है। वे एक और पचास का नोट कुन्नू को देंगे और कहेंगे, जाओ ये सामान ले जाओ। पर तभी मम्मी ने बताया कि बेटी, ये बड़े लोग अक्सर दिल के छोटे होते हैं। कुन्नू बता रहा था कि उसकी बात का नासिरा के पापा कभी यकीन नहीं करेंगे और उसे थप्पड़ मारकर बाहर कर देंगे।

चिल्लाने की आवाज़ सुनकर मैं दरवाज़े की तरफ दौड़ी, भय के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। तभी मैं नासिरा के घर की और भागी। पचास का नोट भी मेरी मुट्ठी में दबा हुआ था।

मैंने दरवाज़े पर आवाज़ सुनी कि कुन्नू रो रहा था। नासिरा के पापा उसे डाँट रहे थे। कुन्नू कह रहा था।, "साहब, नोट सचमुच कहीं गिर गया है। मैंने न कहीं खर्च किया है न किसी के पास रखा है।" पर नासिरा के पापा कड़ककर बोले, "झूठ बोलता है, ज़रूर इसने नोट किसी दोस्त को रखने को दिया है। भला ऐसे कहीं पचास का नोट..।"

तभी मैं जोर से बोल पड़ी, "अंकल जी, यह अभी मेरे घर आया था। इसका नोट मेरे दरवाज़े के पास गिर गया था। फिर मैं सो गई थी और इसके बारे में मेरी मम्मी को भी कुछ नहीं पता।

कुन्नू मेरे पैरों में लिपट गया। और बोला "दीदी! आज आपकी वजह से मैं बच गया। मैं भी पश्चाताप महसूस कर रही थी तथा सोच रही थी कि यदि ईश्वर ने आज समय पर मुझे सद्बुद्धि न दी होती, तो इस बचारे का क्या हाल होता। उसके बाद मैं यही सोचती हुई अपने घर आ गई।

शब्दार्थ

रईस	=	अमीर, धनवान	निगाह	=	देखना
यकीन	=	भरोसा, विश्वास	रोंगटे	=	रोमा, हाथों के बाल
रोंगटे	=	रोमा, हाथों के बाल	पश्चाताप	=	पछतावा
सद्बुद्धि	=	सुमति, अच्छी बुद्धि			

उच्चारण करें

कुन्नू फैक्ट्री रोंगटे पश्चाताप झूठ

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को इस पाठ के माध्यम से बताएँ कि पश्चाताप एवं क्षमा एक-दूसरे के पूरक है।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लेखिका ने क्या मँगाया था?

(ख) छुट्टी के दिन लेखिका क्या करना चाहती थी?

(ग) नासिरा लेखिका को प्यार क्यों करती थी?

(घ) लेखिका का मन चित्रकथा में क्यों नहीं लग रहा था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) दरवाज़े की ओर लेखिका क्यों दौड़ पड़ी?

....

(ख) नासिरा का जीवन लेखिका के जीवन से किस प्रकार भिन्न था?

....

(ग) पचास रूपए का नोट मिलते ही लेखिका क्या कल्पना करने लगी?

....

(घ) नासिरा के पिताजी कुन्नू को क्यों डाँट रहे थे?

....

3. उचित शब्द का चयन करके रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

पेंसिल ईमानदार पचास सहेली

(क) नासिरा लेखिका की .... थी।

(ख) दरवाजे पर लेखिका को .... रूपए का नोट मिला।

(ग) नासिरा के पिता जी नासिरा कों .... लाकर देते थे।

4. दिए गए वाक्यों में शुद्ध, अशुद्ध का चयन करके शुद्ध के सामने (✓) तथा अशुद्ध के सामने (✗) का चिह्न लगाइए।

(क) लेखिका को चित्रकथा पढ़ने का शौक था। ☐

(ख) नासिरा के पिताजी एक गरीब व्यक्ति थे। ☐

(ग) कुन्नू लेखिका को सब्ज़ी देने आया थे।

(घ) चिल्लाने की आवाजें सुनकर लेखिका डर गई।

5. शब्दों का उचित मिलान कीजिए।

(क) नासिरा	नोट
(ख) बढ़िया	पेन
(ग) चार	चित्रकथा
(घ) ईमानदार	सहेली
(ङ) पचास	नौकर

6. नीचे दिए संकेतों के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

किसने कहा, किससे कहा?

(क) ''साहब, नोट सचमुच कहीं गिर गया है।''?

(ख) ''झूठ बोलता है, जरूर इसने नोट किसी दोस्त को रखने दिया होगा।''

(ग) ''नहीं अंकल जी, इसका नोट मेरे घर के दरवाजें के पास ही गिर पड़ा''

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

7. प्रस्तुत अध्याय में लेखिका, पचास रूपए का नोट मिलने के उपरांत विभिन्न प्रकार के स्वप्नों से भाव विभोर हो जाती है, ततपश्चात् कुन्नू की हालत देखकर वह उसे वापस कर देती है, यदि आप लेखिका की जगह होते तो क्या करते? सोच-समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

8. दिए गए वाक्यों में कारक की पहचान कीजिए।

(क) राधिका ने मधुर गीत गाया।

(ख) विनय ने फीस माफी हेतु पत्र लिखा।

(ग) मुझे रेलगाड़ी से जाना हैं।

(घ) माँ करछी के द्वारा सब्जी बना रही हैं।

9. दिए गए शब्दों से वाक्य निर्मित कीजिए।

(क) नासिरा – ....

(ख) कुन्नू – ....

(ग) पश्चाताप – ....

(घ) सद्बुद्धि – ....

(ङ) ऑफिस – ....

10. दिए गए प्रत्यय से दो-दो शब्दों की रचना कीजिए।

(क) ता – ....

(ख) इन – ....

(ग) ऊ – ....

(घ) ई – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

11. कोरोना काल में बहुत से मजदूरों को प्रवास करते हुए देखा गया। इस विषय पर आधारित आप कुन्नू के जीवन को किस प्रकार देखते हैं? अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

12. प्रस्तुत पाठ में प्रयोग दिए गए निम्न शब्दों को अर्थ बताइए।

(क) नौकर – ....

(ख) चित्रकथा – ....

(ग) यकीन – ....

(घ) नीयत – ....

(ङ) क्लर्क – ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

13. प्रस्तुत पाठ में किस जीवन मूल्य की चर्चा की गई है? उसे आधार बनाकर आप किस प्रकार अपने जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे? बताइए।

अध्याय 15

हमारे त्योहार : हमारा स्वाभिमान
(लोककथा)

अध्ययन से पूर्व

- उपरोक्त चित्रों में दर्शाए गए प्रमुख त्योहारों के संबंध में संपूर्ण जानकारियाँ एकत्र कीजिए साथ ही भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मनाए जाने वाले कुछ प्रमुख त्योहारों की सूची भी तैयार कीजिए।

कविता का मूल तत्व

प्रस्तुत अध्याय में विभिन्न प्रकार के त्योहारों के संबंध में बताया गया है साथ ही उसके महत्व को भी दर्शाया गया है।

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ अनेकता में एकता देखने को मिलती है। जिसकी विशालता ही उसकी अदभुत परिचायक है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अनेक त्योहार एवं पर्वों को मनाते हैं।

हमारे भारतवर्ष में कई पर्व ऐसे हैं जो महापुरुषों के जन्मदिवस के रूप में मनाए जाते हैं। इन महापुरुषों ने हमें जो मार्ग दिखाया, उससे हमें प्रेरणा मिलती है। 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्मदिवस "गांधी जयंती" के रूप में देश भर में मनाया जाता है। 15 अगस्त को हम स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इन त्योहारों को संपूर्ण देश में हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इन पर्वों को हम राष्ट्रीय पर्व कहते हैं।

धार्मिक पर्वों में 'रामनवमी' पर्व भगवान रामचंद्र जी के जन्मदिवस के रूप में तथा 'जन्माष्टमी' श्रीकृष्ण के जन्मदिवस के रूप में हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

महात्मा बुद्ध के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बुद्ध पूर्णिमा प्रसिद्ध जैन तीर्थकर महावीर के जन्म के रूप में 'महावीर जयंती' को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। 'नानक जयंती' गुरू नानक देव जी की याद में मनाते हैं जिसे 'गुरूपर्व' के नाम से जानते हैं। जाड़े के दिनों में 'क्रिसमस' के त्योहार को मनाते हैं जिसे ईसा मसीह के जन्मदिवस के रूप में जाना जाता है। इन सभी धर्मों के महापुरुषों ने सेवा, त्याग और प्रेम का संदेश दिया।

अब आता है नववर्ष। प्रत्येक वर्ष हम पहली जनवरी नववर्ष के रूप में मनाते हैं। भारतीय पंचांग के अनुसार नववर्ष पहली जनवरी को नहीं मनाया जाता। हर प्रदेश और हर समुदाय के लोग इसे अलग-अलग दिन अपने-अपने तरीके से मनाते हैं।

'उगाधि' पर्व आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। उन्हीं दिनों मराठी लोग अर्थात महाराष्ट्र के निवासी 'गुड़ी पड़वा' मनाते है। पंजाबी लोग बैसाखी को नववर्ष के रूप में मनाते हैं। 'बिहू' अथवा 'बिछुआ' पर्व को असम के निवासी बड़े धूम-धाम से मनाते हैं। पारसी लोग भी 'नवरोज' के त्योहार को नववर्ष के रूप में मनाते हैं।

हमारे देश में प्रकृति के प्रति बहुत सम्मान है। हमारे कई पर्व प्रकृति से संबंधित हैं। इनमें से प्रमुख पर्व है – "मकर संक्रांति"। यह पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को उत्तर भारत में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। तमिलनाडु में इसे 'पोंगल' के रूप में मनाते हैं। कहते हैं कि भीष्म पितामह ने इसी दिन अपना शरीर त्यागा था। इसी दिन किसान लोग अपने पशुओं की विशेष पूजा करते हैं। केरल में

इसे 'ओणम' के रूप में मनाते हैं। 'ओणम' के साथ राजा बलि और वामन-अवतार की कथा जुड़ी हुई है। राजा बलि विशेष न्यायप्रिय और परम दानवीर थे। उनके शासनकाल में प्रजा बहुत सुखी थी। केरलवासियों की ऐसी मान्यता है कि ओणम के दिन राजा बलि अपनी प्रजा को देखने आते हैं। प्रजा उनके स्वागत में घरों को खूब सजाती है। ओणम को "फूलों का पर्व" भी कहा जाता है। "सर्पाकार नावों की दौड़" इस त्योहार की मुख्य विशेषता है।

'दशहरा' को एक प्रमुख भारतीय त्योहार की संज्ञा दी गई है। जिसे आश्विन मास में बड़े धूम-धाम से मनाते हैं। इसे एक अन्य नाम 'विजयादशमी' के नाम से भी जानते हैं। दुर्गा पूजा इससे ठीक नौ दिन पहले आरंभ होती है। भारत के उत्तर भाग में इसकी शुरूआत रामलीला मंचन के साथ होती है। दसवें दिन दशहरा मनाया जाता है। इसी दिन अयोध्यापति श्रीराम ने लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध किया था। दशहरे के दिन रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों में आग लगाई जाती है। इन्हीं दिनों बंगाल में "दुर्गा पूजा" का आयोजन किया जाता है। "दुर्गा पूजा" बंगाल का प्रमुख त्योहार है।

कार्तिक मास की अमावस्या के दिन दीपावली का त्योहार झिलमिलाती रोशनी के साथ मनाते हैं। इसी दिन अयोध्या के राजा राम रावण का वध करके वापस अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों ने दीपक जलाकर उनका हार्दिक स्वागत किया था। यह पर्व अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। इस त्योहार पर बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। रात्रि के समय लक्ष्मी-गणेश की पूजा की जाती है।

अब मुस्लिम भाइयों के पर्वों का उल्लेख करना विशेष ज़रूरी है। मुस्लिम भाई साल में तीन 'ईद' मनाते हैं। एक ईद को "ईद-उल-फितर" अर्थात् मीठी ईद दूसरी को "ईद-उल-ज़ुहा" अर्थात बकरीद कहते हैं। तीसरी ईद "मिलाद-उन-नबी" है, जो हज़रत मुहम्मद साहब के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है।

फाल्गुन का महीना आते ही "बसंत पंचमी" और 'होली' की मस्ती का रंग चढ़ने लगता है। होली रंगों का त्योहार है। ब्रज की होली बहुत प्रसिद्ध है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा की रात को होलिकादहन होता है। अगले दिन रंग-गुलाल से होली खेली जाती है। होली के अवसर पर लोग अपने मतभेद भुलाकर प्रेम से गले मिलते हैं और नाचते-गाते मस्ती करते हैं। होली के साथ प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप की कथा जुड़ी हुई है। हिरण्यकश्यप प्रह्लाद को मरवाना चाहता था अत: उसे बहन होलिका की गोद में बिठाकर आग लगा दी। भगवान के आशीर्वाद एवं कृपा दृष्टि से प्रह्लाद तो बच गया परंतु होलिका जल कर मर गई। भारत के प्रत्येक पर्व के साथ लोककथाएँ जुड़ी हैं। भारत के पर्वों में लोकनृत्यों का भी प्रचलन है। आंध्रप्रदेश का लोकनृत्य 'बोनालु' और लोकगीत 'बतकम्मा' तथा उत्तर भारत की रासलीला व नौटंकी प्रसिद्ध हैं।

भारत में प्रतिमाह कोई-न-कोई पर्व अवश्य मनाया जाता है। इनसे जीवन में सरसता बनी रहती है। यही कारण है कि भारत को "पर्वों का देश" कहा जाता है।

शब्दार्थ

पर्व	=	त्योहार, उत्सव	प्रकृति	=	आकृति, व्यवहार
जयंती	=	जन्मदिन	अत्याचारी	=	जुल्म करने वाला, राक्षस
सम्मान	=	मान, इज्जत देना	वध	=	हत्या, मारना

उच्चारण करें

क्रिसमस संक्रांति अत्याचारी झिलमिलाती हिरण्यकश्यप बतकम्मा

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को त्योहारों का महत्व और उनकी पारंपरिक मान्यताओं के बारे में विस्तारपूर्वक बताएँ।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भारतीय पंचांग के अनुसार दीपावली किस मास में मनाई जाती है?

(ख) गाँधी जयंती को कब मनाया जाता है?

(ग) रावण को कब मारा गया था?

(घ) गुड़ी पड़वा किसका त्योहार है?

(ङ) ईद को वर्ष में कितनी बार मनाया जाता है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) पोंगल पर्व कहाँ और किस रूप में मनाया जाता है?

....

(ख) भारत में राष्ट्रीय पर्व कौन-कौन से हैं? लिखिए।

....

(ग) नवरोज पर्व का क्या महत्व है? लिखिए।

....

(घ) होली की क्या विशेषताएँ है?

....

(ङ) दीपावली के त्योहार के साथ कौन-सी लोककथा प्रचलित है?

....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) भारत एक ऐसा देश है, जहाँ अनेकता में .... देखने को मिलती है।

(ख) हजरत मोहम्मद साहब का जन्मदिन .... के रूप में मनाया जाता है।

(ग) बुद्ध पूर्णिमा को .... के जन्म दिन के उपलक्ष्य में मनाते हैं।

(घ) .... को एक प्रमुख भारतीय त्यौहार की संज्ञा दी गई है।

(ङ) आंध्र प्रदेश का लोकनृत्य .... है।

(च) केरल का प्रसिद्ध त्योहार .... है।

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

5. भारत को बहुधर्मी और विविध सांस्कृतिक परंपराओं वाला देश क्यों कहा जाता है? सोच समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. दिए गए शब्दों का संधि कीजिए।

(क) जन्म+अष्टमी – .... (ख) प्रति+दिन – ....

(ग) दीपा+वली – .... (घ) जन्म+दिन – ....

7. दिए गए वाक्यों में विशेष्य तथा विशेषण के अलग कीजिए।

	विशेष्य	विशेषण
(क) ईश्वर बहुत दयालु हैं।	....	....
(ख) कन्हैयालाल अत्यंत निर्धन व्यक्ति है।	....	....
(ग) विद्या की अद्भुत देवी सरस्वती है।	....	....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. दीपावली के दिन हम पटाखों का प्रयोग करते हैं, जिनसे वायु प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। अपने शब्दों में दीपावली के त्योहार के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों को उजागर कीजिए।

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. भारत में विभिन्न प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं, दिए गए त्योहारों को पता कीजिए कि वह किस राज्य में मनाए जाते हैं?

चैत्र जात्रा	उगड़ी	उत्तरायण	बसंत उत्सव	छठ पूजा
....	....	....	....	....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

12. त्योहारों को बिना किसी भेदभाव के मनाना भी सामाजिक एकता को प्रदर्शित करता है, इनमें समाहित अद्भुत शैली को आप किस प्रकार अनुसरित करना चाहेंगे?

अध्याय 16

हार की जीत
(कहानी)

अध्ययन से पूर्व

कविता का मूल तत्व

प्रस्तुत कहानी में किसी भी कार्य को ईमानदारी पूर्वक करने की सीख दी गई हैं तथा गरीबों की सहायता करने के लिए प्रेरित किया गया है।

जिस प्रकार माँ अपने बेटे तथा किसान अपने लहलहाते खेतों को देखकर जो आनंद महसूस करता है, ठीक उसी प्रकार बाबा भारती अपने घोडे को देखकर आनंद मग्न हो जाते थे। भजन करने के बाद जो समय की बचत होती थी वह घोड़े को निहारने में अर्पण कर देते थे। वह घोड़ा बहुत सुंदर और बलवान था। उस घोड़े के जैसा पूरे इलाके में कोई दूसरा घोड़ा नहीं था। जिसका नाम बाबा भारती ने 'सुल्तान' रखा था। वह उसे अपने हाथ से खाना खिलाते, नहलाते, और उसे देखकर आनंदित होते। वे अपने गाँव के जीवन को छोडकर गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूँगा," उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे और कहते, ये ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। संध्या समय जब तक सुल्तान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

एक दिन वह सो रहे थे तो सपने में उन्होंने खड्गसिंह को देखा। खड्गसिंह एक कुख्यात डाकू था। धीरे-धीरे सुल्तान की प्रसिद्धि उसे भी सुनने को मिली। उसे देखने के लिए उसका हृदय व्याकुल हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, ''खड्गसिंह, क्या हाल है?''

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, ''आपकी कृपा है।''

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुल्तान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बहुत प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना? जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

खड्गसिंह और बाबा भारती अस्तबल में पहुँचे। सुल्तान को देखकर वह भौंचक्का रह गया क्योंकि उसने ऐसा अलबेला घोड़ा कभी नहीं देखा था। वह मन ही मन सोचने लगा कि ऐसा घोड़ा तो खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ? वह कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी। वह बालकों की-सी अधीरता से बोला, "बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा?"

बाबा भारती ठहरे एक आम इंसान। जो अपने घोड़े की प्रशसा दूसरे से सुनकर भाव विभोर हो गए, जैसे ही घोड़े को खोलकर बाहर ले गए वैसे ही घोड़ा वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल को देखकर ही खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया।

वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था। जाते-जाते उसने कहा, "बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

जैसे ही बाबा भारती की आँख खुली वह सहम से गए। अब उन्हें नींद आनी बंद हो गई थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में काटने लगे। हर एक पल उन्हें खड्गसिंह का भय सताता रहता परंतु कई मास बीतने के बाद भी वह नहीं आया। अब बाबा भारती भी असावधान से हो गए। वह अब इस स्वप्न को भी मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी और मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर से आवाज़ आई, " ओ बाबा, इस कंगले की भी सुनते जा।"

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा था।

बाबा जी बोले, "कहो, तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामवाला यहाँ से तीन मील दूर है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"वैद्य दुर्गादत्त का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

अचानक से उन्हें एक झटका लगा और लगाम भी हाथ से छूट गई। उन्होंने घोड़े की ओर देखा तो अपाहिज व्यक्ति घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है, जो घोड़े को भगाकर ले जा रहा है। उसे देखकर तो उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा के कारण चीख निकल पड़ी। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने जाकर उसकी ओर ऐसी आँख से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका, मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए नहीं कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है

कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। यदि लोगों को इस घटना का पता लग गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे। यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो।"

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके कहे शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँजते रहे। खड्गसिंह सोचने लगा ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

एक रात खड्गसिंह रात्रि के अंधकार में सुल्तान की लगाम पकड़े हुए मंदिर की ओर चल पड़ा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिम-टिमा रहे थे। थोड़ी दूरी पर कुत्ते भौंक रहे थे। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय बाबा भारती वहाँ स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानों कोई पिता बहुत दिनों के बाद अपने बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

शब्दार्थ

अर्पण	=	भेट करना, सौंपना	बलवान	=	शक्तिशाली, बलशाली
भ्रांति	=	भ्रम, चक्कर, संदेह	विस्मय	=	आश्चर्य, अचंभा

उच्चारण करें

घृणा सन्नाटा हृदय विस्मय वृक्ष

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कहानी का सार बताएँ तथा उन्हें ईमानदारीपूर्वक किसी कार्य को करने की शिक्षा दें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) बाबा भारती के घोड़े का नाम क्या था?

(ख) खड्गसिंह कौन था?

(ग) सपने में बाबा भारती ने किसे देखा?

(घ) अपाहिज व्यक्ति के वेश में कौन था?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) बाबा भारती अपने घोड़े की सेवा किस प्रकार करते थे?

....

(ख) सोते समय बाबा भारती की आँखे अचानक क्यों खुल गई?

....

(ग) अस्तबल में घोड़े को देखकर खड्गसिंह ने क्या सोचा?

....

(घ) बाबा भारती के हाथों से घोड़े की लगाम कैसे छूट गई?

....

(ङ) आश्रम में घोर निराशा क्यों छा गई थी?

....

3. दिए गए वाक्यों शुद्ध तथा अशुद्ध वाक्यों की पहचान कीजिए-

(क) बाबा भारती घोडे से बहुत नफ़रत करते थे। ☐

(ख) खड़्ग सिंह एक साधारण इंसान था। ☐

(ग) घोड़ा अस्तबल में तथा रहता था़। ☐

(घ) डकैत ने घोड़े को चुरा लिया था। ☐

(ङ) जब सुबह बाबा भारती उठे तो उन्हें घोड़ा अस्तबल में मिला। ☐

ज़रा सोचिए

Critical Thinking

4. खड्गसिंह, बाबा भारती के घोड़े को उनके हाथों से छुड़ाकर ले गया। क्या हमें भी किसी की घनिष्ठता प्राप्त करके भरोसे को तोड़ना चाहिए? सोच समझकर बताइए।

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

5. **दिए गए मुहावरों के अर्थ बताइए।**

मुहावरे – जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ प्रकट करता है, मुहावरा कहलाता हैं। जैसे:- आँखे दिवाना- क्रोध करना।

(क) मुँह में पानी भरह आना – ....
(ख) अक्ल का अँधा – ....
(ग) भंडाफोड़ होना – ....
(घ) कान कतरना – ....
(ङ) दाँत खट्टे करना – ....

6. **उपर्युक्त वाक्यों में से विशेषण को अलग कर लिखिए।**

(क) बाबा भारती के पास सुंदर घोड़ा था – ....
(ख) खड्गसिंह कुख्यात डाकू था – ....
(ग) अस्तबल में कई घोड़े रहते थे – ....
(घ) लोग बाबा भारती को संन्यासी मानते थे – ....
(ङ) हमें गरीब व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

7. **कभी-कभी दयालुता का भाव भी किसी बुरे इंसान को गलत काम करने से रोक देता है। इस कथन के भावार्थ को उदाहरण द्वारा अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।**

....
....
....
....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

8. **नीचे दिए गए नामों को उनकी विशिष्टता बताते हुए उनके संबंध में लिखिए।**

(क) चेतक – ....   (ख) बादल – ....
(ग) बादल – ....   (घ) पिनाक – ....

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

9. **प्रस्तुत पाठ 'हार की जीत के विभिन्न पात्रों में से आप किस पात्र के चरित्र से प्रभावित हुए? जिसका अनुसरण आप अपने जीवन में करना चाहेंगे? बताइए।**

अध्याय 17

पर्यावरण प्रदूषण
(निबंध)

अध्ययन से पूर्व

एकांकी का मूल तत्व

प्रस्तुत पाठ में पर्यावरण के बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक धरोहर को नष्ट कर अवरोध उत्पन्न करने पर उन्हें रोकने का उपाय दर्शाया गया हैं।

वर्तमान समय में हम जिस वातावरण में रहते हैं, जिस प्रकार की वायु को हम पेड़-पौधों के माध्यम से श्वास के रूप में ले रहे हैं एवं जिन ऋतुओं का आनंद उठा रहे हैं वे सभी हमें प्रकृति के द्वारा सौपी गई हैं। इस उपहार को संभालकर रखना ही हमारा कर्तव्य हैं। प्राकृतिक घटनाओं के द्वारा चलने वाला नियमित चक्र हमारे जीव जंतुओं तथा अन्य पेड़-पौधों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

पर्यावरण शब्द 'परि' तथा 'आवरण', दो शब्दों के सार्थक मेल से बना है। 'परि' का अर्थ है - चारों तरफ तथा 'आवरण' का अर्थ है - घेरा अर्थात् प्रकृति में जो भी चारों ओर परिलक्षित है यथा जल, मृदा, वायु, पेड़-पौधे तथा प्राणी आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं। हमारे आस-पास जो प्राकृतिक आवरण है, उसे हम पर्यावरण कहते हैं। हमारे पर्यावरण को जल, वायु, सूर्य, चंद्रमा, नदियाँ, पर्वत, वनस्पति आदि अत्यधिक प्रभावित करते हैं और पर्यावरण का संतुलन इन सभी पर निर्भर करता है।

पर्यावरण के प्रदूषण का सीधा-साधा अर्थ है, मृदा, हवा तथा जल जैसे पर्यावरण के आवश्यक घटकों का अपनी गुणवत्ता को खो देना तथा उनके बीच एक प्रकार के असंतुलन का जन्म लेना। यह तो ज्ञात ही है कि पृथ्वी पर फल-फूल आदि होना जीवन के लिए कितना आवश्यक है। इन घटकों की गुणवत्ता में हुई कमी या असंतुलन का सीधा दुष्प्रभाव उनका उपयोग कर रहे जीव-जंतुओं एवं पेड़-पौधे पर पड़ता है।

मानव ने प्रकृति की छेड़छाड़ विभिन्न सुख सुविधाओं के उपभोग हेतु किया हैं, जिसके कारण प्रदूषण में वृद्धि हुई है। निरंतर आगे बढ़ने की कोशिश में इंसान प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित तरीके से दोहन करता रहता हैं। जिसके कारण प्रदूषण की विभिन्न समस्याएँ विशाल रूप ले चुकी हैं। प्रदूषण के विभिन्न प्रकार निम्न हैं-

जल प्रदूषण - बड़े-बड़े नगरों और औद्योगिक कारखानों से निकलने वाले ज़हरीले अवशेष नदियों में बहाए जाने से जल प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई हैं। घरों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों एवं गंदे जल को नदियों में बहा देने से भी जल प्रदूषित होता है। जल प्रदूषण से पेट संबंधी बीमारियाँ होती हैं, जैसे : पीलिया, डायरिया आदि।

वायु प्रदूषण - प्रत्येक जीव एवं प्राणी को साँस लेने के लिए शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है। हम ऑक्सीजन लेते हैं आरै कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ते है। वायु में फैलने वाला प्रदूषण मुख्यत: वाहनों एवं कारखानों से निकलने वाले धुएँ एवं गैसों से होता है। वाहनों एवं कारखानों से निकलने वाली हानिकारक गैसें, जैसे- कार्बन मोनोऑक्साइड तथा सल्फर डाईऑक्साइड तथा सल्फर डाईऑक्साइड वातावरण को प्रदूषित करती है। इनसे फेफड़े व साँस संबंधी बीमारियाँ, जैसे- दमा, खाँसी और फेफड़ों का कैंसर आदि होने का खतरा बढ़ जाता है।

मृदा-प्रदूषण- कृषि से होने वाले उत्पादों के लिए भूमि पर निरंतर रासायनिक तत्वों का उपयोग हो रहा है जिससे उसकी उर्वरा शक्ति क्षीण होती जा रही है। इसका दुष्प्रभाव मानवीय स्वास्थ्य पर पड़ रहा है हालांकि वर्षा के कम होने के कारण जलस्तर निरंतर घट रहा है जिसके कारण पेयजल का संकट भी गहराने लगा है।

वर्तमान में पर्यावरण का प्रदूषण न सिर्फ हमारी बल्कि पूरे विश्व की समस्या बन गई है। इसलिए इसके संरक्षण के लिए सभी देशों ने नियम बनाए हैं। हमारी सरकार ने भी पर्यावरण के लिए कई कानून बनाए हैं। अतः हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम उन नियमों व कानूनों का पालन करें। कानून बनाने के साथ–साथ हमें लोगों को जागरूक करना भी आवश्यक हैं।

ध्वनि प्रदूषण- वाहनों, रेडियो, टेलिविजन और कल–कारखानों से उत्पन्न होने वाली तेज़ आवाज़ के कारण ध्वनि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है। अधिक शोर का हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ध्वनि प्रदूषण से न सिर्फ हमारी श्रवण शक्ति कमज़ोर होती है बल्कि हृदय रोग तथा रक्त–चाप की बीमारियों का भी जन्म होता है। ध्वनि प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों को देखते हुए ही गाड़ी के तेज़ हॉर्न अस्पतालों एवं स्कूलों के निकट बजाना वर्जित है।

क्या आप जानते हैं कि प्रशासन की अनुमति के बिना लाउडस्पीकर नहीं लगाया जा सकता? शादी–विवाह, जागरण आदि समारोहों में भी लाउडस्पीकर आदि बजाने की अनुमति हमें पहले से ही संबंधित विभाग से लेनी पड़ती है। देर रात लाउडस्पीकर बजाना कानूनी रूप से जुर्म है।

शब्दार्थ

कर्तव्य	=	जिम्मेदारी	दुष्प्रभाव	=	बुरा असर
अंग	=	हिस्सा, भाग	अपशिष्ट	=	व्यर्थ
गुणवत्ता	=	विशिष्टता	निरंतर	=	लगातार
असंतुलन	=	अस्थिरता, अनुपातहीनता	मृदा	=	मिट्टी
घटक	=	तत्व	उर्वरा शक्ति	=	उपजाऊपन

उच्चारण करें

औद्योगिक   संरक्षण   पर्यावरण   श्रवणशक्ति   उर्वरा

शिक्षण संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को पर्यावरण प्रदूषण के सभी पक्षों को विस्तारपूर्वक समझाएँ और पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रोत्साहित करें।

अभ्यास कार्य

ज़रा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) पर्यावरण किन शब्दों के योग से बना हैं?

(ख) जल प्रदूषण से कौन-सी बीमारियाँ होती है?

(ग) हमारे पर्यावरण को कौन-कौन प्रभावित करते है?

(घ) वाहनों एवं कारखानों से कौन-सी गैस निकलती है?

ज़रा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रदूषण से आप क्या समझते है? इसके प्रकारों को लिखिए।

(ख) जल प्रदूषण के प्रमुख कारकों को लिखिए।

(ग) मृदा प्रदूषण के क्या कारण हैं?

(घ) वायु प्रदूषण से किस प्रकार के रोगों का खतरा उत्पन्न होता है?

(ङ) ध्वनि प्रदूषण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को लिखिए।

3. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर (✓) और (✗) का निशान लगाइए।

(क) पर्यावरण से तात्पर्य हमारे आस-पास के प्राकृतिक आवरण से है। ☐

(ख) पीलिया रोग वायु प्रदूषण के कारण होता है। ☐

(ग) खाँसी की समस्या जल प्रदूषण से उत्पन्न होता है। ☐

(घ) हृदय रोग ध्वनि प्रदूषण के कारण उत्पन्न होता है। ☐

4. **उचित शब्दों के साथ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

(क) कानून बनाने के साथ-साथ हमें लोगों को .... करना भी आवश्यक हैं।

(ख) ध्वनि प्रदूषण के .... प्रभावों को देखते हुए ही गाड़ी के तेज़ हॉर्न अस्पतालों एवं .... के निकट बजाने वर्जित हैं।

(ग) अधिक .... का हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता हैं।

(घ) वायु में फैलने वाला प्रदूषण मुख्यत: वाहनों एवं कारखानों से निकलने वालें .... एवं से होता है।

ज़रा लिखिए

Writing Skills

5. **अपने घर के आस-पास फैलने वाली गंदगी की रोकथाम हेतु कुछ कारगर उपाय को सोचकर बताइए।**

ज़रा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

6. **नीचे दिए गए शब्दों से वाक्य रचना कीजिए।**

(क) हानिकारक – ....

(ख) दुष्प्रभाव – ....

(ग) रक्तचाप – ....

(घ) वातावरण – ....

(ङ) कारखाना – ....

7. **दिए गए प्रत्यय से दो- दो शब्दों की रचना कीजिए।**

(क) ता – .... (ख) पन – ....

(ग) वट – .... (घ) हट – ....

8. **नीचे दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।**

(क) सुरेंद्र – .... + ...

(ख) मुनींद्र – .... + ...

(ग) रामेश्वर – .... + ...

(घ) नयन – .... + ...

9. तत्पुरूष समास के पाँच उदाहरण लिखकर उनमें पदों को भी बताएँ

(क) राजादेश – राजा का आदेश

(ख) .... – ....

(ग) .... – ....

(घ) .... – ....

(ङ) .... – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए

Creative Skills

10. पर्यावरण संरक्षण विषय पर एक संक्षिप्त निबंध तैयार कीजिए।

....

....

....

....

....

ज़रा दिमाग लगाइए

Brain Storming Activity

11. नीचे दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखकर उनका प्रदूषण के प्रमुख प्रकारों में विभाजन कीजिए।

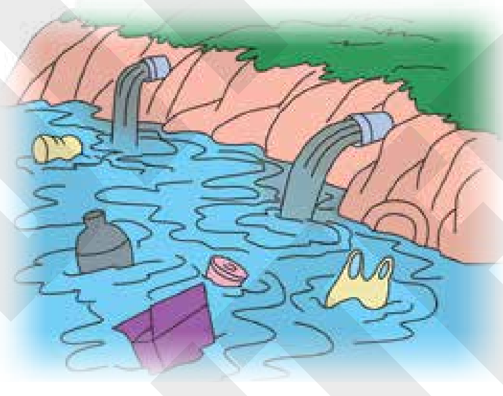

जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

(Life skills & Value Based Quetion)

12. प्रदूषण की रोकथाम हेतु आप किस प्रकार के जागरूकता अभियान का सचालन करेगें? जिससे लोगों को भी लाभ मिलें। बताइए।

अभ्यास प्रश्न पत्र-1

नाम	कक्षा	अनुक्रमांक ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भारत का 'राष्ट्रीय खेल' कौन सा है?

(ख) हिमाचल प्रदेश में बहने वाली कुछ नदियों के नाम बताइए।

(ग) 'मुक्ति' शब्द से आपका क्या आशय है?

(घ) जुम्मन चाचा का न्याय कितना न्याय संगत रहा? अपने आधार पर पुष्टि कर लिखिए।

(ङ) 'करो या मरो' किस स्वतंत्रता सेनानी का नारा है? नाम लिखकर बताइए।

2. नीचे दिए गए मुहावरों का अर्थ लिखिए।

(क) ऐड़ी चोटी का जोर लगाना ....

(ख) आँखों का तारा ....

(ग) चिराग तले अँधेरा ....

(घ) कान खड़े हो जाना ....

(ङ) लाल-पीला होना ....

3. नीचे दिए गए उपसर्ग से सार्थक शब्दों का निर्माण कीजिए।

(क) सु .... (ख) नि ....

(ग) बे .... (घ) अ ....

(ङ) प्र .... (च) स्व ....

4. नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए।

(क) देव ....

(ख) अनोखा ....

(ग) रत्नाकर ....

(घ) धरोहर ....

(ङ) मित्र ....

EDITONE INTERNATIONAL

5. **नीचे दिए गए शब्दों को एकवचन से बहुवचन में बदलकर लिखिए।**

एकवचन		बहुवचन
(क) पानी	–	....
(ख) कर्मचारी	–	....
(ग) पुड़िया	–	....
(घ) ऋतु	–	....
(ङ) पंक्ति	–	....

6. **नीचे दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(क) सांस ....

सास ....

(ख) दीन ....

दिन ....

(ग) उत्तर ....

उतर ....

7. **दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

(क) निर्मम ....

(ख) आकांक्षा ....

(ग) यात्रा ....

(घ) शक्तिशाली ....

(ङ) मौसम ....

8. **दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।**

(क) परोपकार .... + ...

(ख) मनोहर .... + ...

(ग) रजनीश .... + ...

(घ) दुर्गण .... + ...

अभ्यास प्रश्न पत्र-2

नाम .... कक्षा .... अनुक्रमांक ....

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विपरीत परिस्थितियाँ हमें क्या बोध कराती हैं?

(ख) पश्चाताप हमारे व्यक्तित्व को कैसे निखारता है?

(ग) दक्षिण भारत के प्रमुख त्योहारों के नाम बताइए।

(घ) बाबा भारती की किस बात का खड्गसिंह पर गहरा प्रभाव पड़ा?

2. नीचे दिए गए दो पदों के बीच कारक विभक्ति का लोप कर समास का नाम लिखिए और भेद बताइए।

(क) राजा का पुत्र – ....

(ख) हाथ से लिखा हुआ – ....

(ग) जन्म से लेकर – ....

(घ) आयात और नियति – ....

3. नीचे दी गए वाक्यों में उचित स्थान पर विराम चिह्न का प्रयोग कर वाक्यों को सार्थक रूप में परिवर्तित कर पुनः लिखिए।

(क) छि: कितनी गंदगी है– ....

(ख) गोदान प्रेमचंद जी की अमर रचना है – ....

(ग) उसने मुझे देखा और भाग गया – ....

(घ) प्रो चौधरी कल शायद हमारे यहाँ आए – ....

4. निम्न वाक्यों की क्रियाओं के आधार पर उनके काल का नाम लिखिए।

(क) बारिश में मोर नाचते हैं। ....

(ख) यात्रियों से भरी बस जा रही हैं। ....

(ग) सदैव लक्ष्य प्राप्ति में तत्पर रहो। ....

(घ) उसने मेरे नाम पत्र लिखा। ....

5. **दिए गए उपसर्गों से सार्थक शब्दों का निर्माण कीजिए।**

वि

3

गैर

6. **दिए गए वाक्य में से विशेषण और विशेष्य को अलग-अलग कीजिए।**

	विशेषण शब्द	विशेष्य शब्द
(क) नीता अच्छी लेखिका है।		
(ख) इसका उत्तर आगे से तीसरा छात्र देगा।		
(ग) प्रतिदिन ताज़े फलों को खाओ।		
(घ) राधिका मेधावी छात्रा है।		

7. **दिए गए मुहावरों का अर्थ लिखिए।**

(क) गुस्सा हवा हो जाना – ....

(ख) थाली का बैंगन – ....

(ग) बाएँ हाथ का खेल – ....

(घ) अपना उल्लू सीधा करना – ....

8. **संधि कीजिए।**

(क) चिकित्सा –

(ख) वाचन –

(ग) हिम –

(घ) भोजन –

आलय

9. **निम्न वर्णों का संयोग कर शब्द बनाइए।**

(क) ऑ + ग् + अ + न् + अ = ...

(ख) क् + ष् + ए + त् + र् + ई + य् + अ = ...

(ग) क् + अ + ठ् + इ + न् + अ = ...